CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN
SURAT.

Manuscripts Library

50PB
Coll. No. 491

Title Rati Rahasya

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No.: 491 Subject: ~~Dharma~~ Kāma śāstra

Title: Rati Rahasya

Author: Vidhyādhara Scribe: —

Date of the work: — Date of the Ms.: —

Place of the work: — Place of the Ms.: —

Size: 8.5" by 4.5" Extent: 28 foll.

Language: Sanskrit. Script: Devanāgari

Remarks: —

[illegible] नि [illegible] वि [illegible] यि नो [illegible]
गरापति [illegible] आश्रे [illegible] का [illegible] पर [illegible] ना [illegible] द [illegible] स तु जा दिव ने नि
कुषे [illegible] ॥ इंदो [illegible] अय [illegible] का: [illegible] न [illegible] पदु बंधि न [illegible] स न धत्रे [illegible] मन [illegible] नि [illegible]
जन्म ॥ प्रपि जं नु पदं च नु [illegible] का: पदु बंधि न [illegible] स न धत्रे मन [illegible] ग मन [illegible] नितं
स्रात ८ नु धनु व्यश्री [illegible] न त्री मन [illegible] राज स्ये ता श्री [illegible] जं [illegible] नि किं [illegible]
उ को कं ना [illegible] मूत्र विनास्र तोयौ [illegible] नं द [illegible] कु तु [illegible] [illegible] का मं [illegible] सु धा [illegible] प्रद
पत्र त्या वच सा प्रपु प [illegible] ॥ नूया नूया [illegible] नि वरं [illegible] दुग्धा नि दु ग्धा नि मन्त्याय प्राणे [illegible] धिया
सोय मादायि सारः ॥ [illegible] स्वादुः पथ्या ललित रम [illegible] पा [illegible] ना ना गर [illegible] मु रव्या दे वै रति व [illegible] मत:
सि व्यत्त पं डि तिं [illegible] ॥ त्र सा ध्याया: [illegible] सि द्धि सि [illegible] पा श्वा नु रं जं त्तं ॥ [illegible] का या [illegible] रति: [illegible] कु [illegible]
नशास्त्र प्रयो जनम ॥ ॥ संसारे पर लीन तो यत र से मा रं य दे [illegible] परस्य स्याय च स मय्र एव विषय
ग्रामः प्रपं चो मनः [illegible] त्वं व स्वं [illegible] मप्य विषयो [illegible] तु ता नो पत्तं ॥ को वा विंदति [illegible] मन्मथ
द०ध्या के लावे चिच्या [illegible] जनः ॥ [illegible] ॥ ज्ञा नि स्वत्ता व गु राग दे श [illegible] धम न्चि [illegible] ना वें गि ते षु वि [illegible] रति तत्र मू [illegible]
[illegible] पि दि स्व [illegible] तियो वन मंग ना या: [illegible] ना लि के र फ ल मा प क पि: [illegible] ति ॥ [illegible] यद्या स्याय न
सूत्रे संग्र [illegible] ब [illegible] तं [illegible] मप्या गमे [illegible] वाच्य मि दं तया मु निगि रां [illegible] दि सा धा रिणी ॥ सा वयं
जि त मन्य [illegible] रां गि [illegible] धि लत्व्रा पि न्वे द स्ति त मं दा वी नामु प मु ज्य ते न द पि रि स्य ष्टा भि धे या [illegible] ति ॥ ८ ॥ ११ ॥

प्रथमनं दिकेश्वर गो [illegible] का पुत्रयो मतिं त संग्र [illegible] मि [illegible] तो वा स्याय नीयं । पद्मिनी तदनु चित्रिणं
ततः शंखिनी तदनु हस्तिनी विदुः ॥ [illegible] मा प्रथमा ना षि ता ता त्ता [illegible] यं ते युवति रु [illegible] रस ॥ [illegible]
[illegible] पद्मिनी लक्षणम् ॥ [illegible] मज मृ [illegible] म [illegible] फु [illegible] रा [illegible] व गं धा [illegible] तनु [illegible] सि [illegible] स्या: सौर [illegible] दि व्य मंगे । च कि
त मृग [illegible] तर [illegible] नयु [illegible] मन [illegible] श्री [illegible] वि [illegible] ॥ [illegible] ति ल कु सुम समा नां बिभ्र
ती ना सि [illegible] च द्विजगुरु सुर पूजा [illegible] द घा मा स [illegible] । कु व स य [illegible] दल [illegible] ति: [illegible] पि [illegible] प य गौ रा [illegible]
चक्रु म [illegible] कार कामा न पत्रा ॥ [illegible] ॥ व्रज ति मृदु [illegible] रा ज [illegible] सा व तन्वी त्रि वलि ल सि त मध्या हं
स वो णी सु वे षा । मृदु [illegible] वि ज घु [illegible] मा नि नी गा ढ [illegible] ध व ल कु सुम वा सो व [illegible] ता पद्मिनी
स्यात् ॥ [illegible] ॥ इति पद्मिनी लक्षणं । [illegible] तिद [illegible] ना ति [illegible] [illegible] न [illegible] मन वि [illegible]
जंघो [illegible] । मृदु [illegible] रति [illegible] वं कु [illegible] च [illegible] मर व चन म वि [illegible] गा न [illegible] गी ता [illegible] ॥ १२ ॥
मदनसदन [illegible] वर्तु लो [illegible] म [illegible] मदन [illegible] ज [illegible] मत्त [illegible] सां [illegible] लि च पत्र द
[illegible] चि सं [illegible] रस या म [illegible] वि नि [illegible] ॥ तनु र त्तनु र पि सा
दी र्घ दे [illegible] म न्या [illegible] कु सुम [illegible] ॥ [illegible] मं गां दी र्घ नि [illegible]
व [illegible] ती सम [illegible] म नि सो म [illegible] रंग [illegible] ॥ [illegible] जति व [illegible] गो स [illegible] य: स्वा
सै र सा लि [illegible] का [illegible] वि [illegible] गा त्री ॥ न [illegible] न व [illegible] वि [illegible] न मा

…विहतै स्थूलवक्त्रां

नचिला पीं खिनी रासजो त्रिः ॥१०॥ अथ [illegible] नी ॥ श्रीं [illegible]
नचिता शंखिनी रासजोत्रि ॥ [illegible] चपिज कंचकूलापा कूरचेष्टा तिमी ॥ नादि रद्दाव
हतिचरण युग्मं चरहस्तपीनां ॥ चपिजकंच वृक्षापा क्रूरचेष्टा तिमी ॥ वाता जलदति विपुलो
धिः स्वांगके नगिकन ॥१२॥ दिग्रुण [illegible] कृषापा हारनिर्व्व कवारा जलदति विपुलो श्री
दुःखसाध्याप्रयोग ॥ [illegible] स्पितनुसो मात्पं समं तवि शावं वृहलिक्षचनरं धुंहस्तिनी
गरूदो स्मि ॥ [illegible] न पद्मपुरा [illegible] र पर्दु ६ वंधु २ दिक्रु १ नाग ८ संख्या स्तिथय रूद्र तेस्युः
नये चित्रिणी नां सुरु [illegible] धि ॥५॥ नुवेनस्वा ॥ विमु [illegible] पद्मिण्यां स्तदिनेर वियय स्पशं
खिनी नां चतस्र ॥६॥ पंकास सेन नयेन पद्मिनी ॥ [illegible] रति पदेन शंखिनी ॥ स्कंधपा
दयुग्मेन हस्तिनी ॥ नागरए रमयंति चित्रिणी [illegible] रतिसुखा कर्त्ता चित्रिणी
मयूयामेन अतिदिन रजन्यां हस्तिनी च द्वितीये ॥ गमयंति चरती ये शंखिनी मर्दिता
वं रमयति रमणीयां पद्मिनी चतुर्थयामे ॥२॥ मोचाकंद रसेन जाति फलं कुर्या द्विधां
चित्रिणी पद्मोमा त्रिकस्पुतौ च नदि रंगी पारापत क्रामरो ॥ श्री द्विमा वशारं नसु
गंधित गरा मूला न्वितं श्रीफलं तां बूलेन सह प्रदत्तम विरान्मंत्रे रमीजिः क्रमात् ॥२॥
ॐ पंच वि हंगम र कामदेवाय स्वाहा ॥ गुह २१ पंचपंच २ कामदेवाय स्वाहा ॥ गुह २ घि ॥२

पार्श्वयोश्च । दत्वाः
विदधत श्चुंबनोष्ठं स्तनेराणी ज्ञाचुबं व्यंगं विरचितपुलकाः पृष्ठतः पार्श्वयोश्च । दत्वा
शं नखांकू मदकर जपुरखे सं चयं तो नितंबं ष्टां गंगारं मंदसीकूः प्रतिपदियुवती नाग
शं नखां कू मदकर जमुखे संचयंतो नितंबं श्रा ग गारं मंदसीकूः प्रतिपदि युवती नाग
राई वयंति ॥१॥ मल न मदन सुस्तो मूल चं च नखाश्च खो स्त्री गंड पालि विचुंबन्नयनकू
चयुगा नापृष्ठ पार्श्वत्रि खागे ॥ अधर मवलि हं ताना मूलं चं चनखाग्रः स्तघनपरि
जो ग्रावयत्यज्ञि युमे ॥८॥ तृतीयायां श्लिष्यान्निविडित मथास न पुलकं गुरु वांक्षा मल ईं
लिखित पार्श्वः वृहदे ॥ नुजापीडं कुचदशन वसना स्वादतस्त्वस्तनो पांतार श्च स्फुरितम
बलो विकृसयाति ॥९॥ चतुर्थ्यामालिंग्य स्फुट मतः [illegible] शारी रुक्री डति क्षमरस्पनदानि
खित वामो रुफलक [illegible] निस्फुरितम [illegible] पर प्रदत्वा चूचकयोः स खेल
जरजलैः ॥१०॥ पंचम्यां [illegible] दक्षाय नाजील रशारश्च स्फुरित
मपुलकं चुंबन कुचौ [illegible] ॥११॥ त्रिदिन मदना [illegible] दत्वा सो विरह [illegible] दनम्भलितत्र
लिखेचूरहदे स्वात्ते [illegible] रमयति [illegible] कामिनी वाह
लापान वक्त्र पप्राक ॥ [illegible] नता [illegible] पुलकं दद्वचुंचत
मानोः ॥१२॥ अष्टम्या परिरभ्य [illegible] तिन खेदयन् [illegible] स्तनौ पीडयन् त्रीया नदनास्य
बद्धिमस्याच्चक ॥ नानी मूलं [illegible] पाणि रघरं दत्वा स्तनौ पीडयन् त्रीयां न मदनालय
चविलिख न पार्श्वौ नि वाम्यां नखैः ॥१३॥ नवम्यां चुंबन खलि लिखन शिरा धरं नामिनवामं
इनमनि

रिकामदेवायस्वाहा॥ ॐ नमो कामदेवाय मम ... कामातुरं कुरु स्वाहा॥ इति
...कविशिरोरत्नविरचिते रतिरहस्ये मन्त्राधिकारो नाम प्रथमः परिच्छेदः॥ १॥ ६ ॥ रूपवन्त
अथेदानीं सर्वकामिनीसाधारणीं चन्द्रकलां निरूप्यामः अंगुष्ठे च पदे गुल्फे जानुनि भगे नाभौ
मगरस्नाभौ मेष्वंगस्थिते ॥ हृत्कक्षायां नयनवामस्तुपदगा पंदादयस्तवेन ॥ के शहस्तिकचा
नललाटनयनेचुंबति दंतक्षतं ... न निपीडयंति बहुधा चुंबंति गंडस्थलं ॥ २ ॥ दत्त्वा छनं
लिखंति नखैरुरौ ... तिगाढं स्तनं ... पतेना ... नो चाधरे चान्ते ॥ २ ॥ कुर्वं
तिस्मरमंदिरे करिकरक्रीडां स्त्रियो ... गुल्फपदानि च प्रलिंगं तितेदानम
इत्येवं क्रमयंति येषां ... लिखंति ... पुंचिकांग्रे ... स्पृशन्ति वक्ष
यसिं ॥ ३ ॥ एवमादौ वारयुक्ता हरिहरतनया पंचबाणः स्मरस्य वामानालक्ष्माप्य मीवांहृदय
कुचद्वौ ... गुल्फे क्रमेण ॥ स्थानेष्वेतेषु त्वयोनिजनयनचतुः पेनते स्तैः पतद्भिः स्पंदंते संप
रीणां ... सद्भिःचरमतात्तद्विमप
१ग धृतं गोत्रपुत्र विताडितो मधुना ... ति वक्षः ... मददृगिपूरे वृन्दोह
तो ... आडंबरी पृष्ठेषु तिष्ठत्यसौ ॥ ५ ॥ कृष्णा ... कुंतेषु च प्रतिपदं ... प्रासम
हस्तापयो स्वतायाम् ... मदनो ... नरोदति ॥ ... मनसिजप्रस्ता
वना पंडितां ... चिंतयंति बकुलमौलि स्फुरि ... श्रुतिः ॥ ६ ॥ ... पायगाढं ... सि

... कुटी स्तनोरस्थल पृष्ठ मध्ये स्मरं द्वाभ्यां प्रतिविवाधर्यति ॥ १४ ॥ एवमादर्पणं वरजकुलित
श्रीवत्सा जिं ... गाढं पायं पा पं ... नवसनं ... ॥ घातं घातं हृदि ... सितं स्तन
... गारतुङ्गा संगक्रीडासरलित ... कामिनीद्रावयं ॥ १५ ॥ धादर्पणं प्रदि चुंब्यगाढमस्य
चुंबन ... दधीतश्री कृत ... ष्पदंत च्छदं । चुंबनोत्तरीमन
५ तव तिथौ निःपाञ्चवामस्तनं ... रहः ... रपाने ... ॥ १६ ॥ ... दप्या
रितिथौ विचुंबित ... मूले च चन्द्रकला ... हनिवेशितद्विपत्रराः क्रीडंति कांतातनौ ॥ द
र्शाद्यागतिथौ च नर्तितनखाः स्कंधस्थली रंतनः ... चुंबि ... चितनराः कुर्युः स्त्रियं विद्रु
तां ॥ १७ ॥ इति रतिरहस्ये चन्द्रकलाधिकारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥ ॥ ... सारं नंदि केश्वरीय
... मतं । दुग्ध ... न ... यति । आरोह ... वरांनवकाद
शांगुलैः मृगे शशो वृषो ... त्रियः ॥ ३ ॥ ... षयोस्तया ॥
हस्तिनीस्य ... मतं ... रतं त्रयं ॥ २ ॥ ... वडवाश
... हस्तिनी ॥ ३ ॥ ... हस्तिनीशश्री ॥ इति ... भरतमु
च्यते ॥ ४ ॥ उत्तमा निस्सा ... रतद्युपा ... नीचाद्ययं ... तिनी चामिताधमं ॥ ५ ॥
... नपतीकारादं ... न्निमदे ... ति नकृष्णा तियापि ... तो ... ॥ ६ ॥ ... मदुष्क
तः संपीडन सद्यायहृदि ॥ न ... तिनकृष्ण ... नस्तं ... ॥ ७ ॥ ... समयः ...

मध्या प्रगल्भात्रयः। संतिस्त्रान कुलायेकं द्विनयंतोयथाबलात्॥ [illegible] धजातिश्यातेन [illegible] नवा त्र॥
दारगाच्च मुखतासो विसृष्टिः स्पदना सिता॥८॥ आरंता मन्न निस्पंद जेदा नो सुखसेवद॥ मध्या
त्वंतेन सुरवत्यस्याधिसृष्टि [illegible] मत्रासद॥९॥ दारगंबरंती रुदती नृत्यंती चातिविह्वला॥ निःसह
तदायाति मुक्ती रतसोच्चा॥१०॥ विसृष्टेन हृ नारीणां लघुमध्याधिरोदया॥ नच प्र[illegible]तामव
स्या ग्रालतोपिप्रमाणतस्तु॥११॥ मदमध्यमचंडाख्य वेगतात्रयमेवास्तथा॥ [illegible] मुत्रतानेपा
स्तनापि नवचारुता॥१२॥ धैर्य बहु कृताघातसहत्वं र निलोलज्जा॥ चंडवेगस्य चिह्नानि मंदवेगो
विपर्ययः॥१३॥ तथ्यमं ना वेगने भर नावा रक्तलक्षयेत्॥ प्रमाणं नाव [illegible] स्यादि स्पष्टे सुमविप
ति॥१४॥ रतानि सौम्ये स्यात् त्रिविधं सुरतमुत्तमात्॥ सर्वं विषमजन्तु स्यादथ पंयप्रचोदितं॥१६॥
शेषेतु मध्यमत्वं स्यात् [illegible] अपि कुसुमितं। अल्पकच्छ मननिनी चरस्या संदोपादिति नामितन्न॥१७॥
उक्तं नंग्यादि भेदा नामि दानीं चिह्नमुच्यते॥ सामान्य [illegible] चितघना [illegible] दरी नितंबाधा॥
[illegible] विवरना सापुट विकट पदेन हृ चिरपक्ष्मलाक्षी च॥१८॥ अरुण [illegible] चरण कोमलतरलद
[illegible] कुत्यता॥ आयत [illegible] नृपाल्यग्रीवा नतिमांसलोरू जघना च॥१९॥ समगुल्फा [illegible] गजगतिर
[illegible] कुलितो नन स्तनी तन्वी॥ सरल [illegible] लघु [illegible] पा [illegible] तनं पटा [illegible]॥२०॥ कुसुमलद
निरोनिस लिजा सरलांग लिरसमधुरोक्तिः॥ निम्नषडंगुलसगुल्फा [illegible] तु [illegible] रागिणी [illegible]॥२१॥
निम्नसमुन्नत [illegible] स्थूल सरल सांद्र शिरसिजप्रचया॥ उत्पलदलतरलनयना स्थूलायतक ॥४॥

[illegible] गल वदना॥२२॥ स्थूलरदना [illegible] निदायदंतच्छदा नवरुचिनकुंचकलशा। सुवलि। [illegible] मां स्तनबा
हु [illegible] कमल मृदुल [illegible] पाणिः॥२३॥ विस्तनहृदय कपाटा गजमदमधुरोक्तिरीर्घ्या [illegible] नि
स्तु [illegible] दरी कमल मृदुलाम् [illegible]॥ चक्रकाचिर जघनस्थं मजघु [illegible]॥२४॥ विपुल [illegible] कटि नतिमध्या [illegible] समग
व्र सुवर्णलनासा [illegible] चक्रकाचिर जघन [illegible]॥ प्रथम [illegible] चरन धातादि
मनचक्र समचरणा। चपलहृदय कोमलतनुर्निद्रा [illegible] प्रिया [illegible]॥२५॥ पृथु [illegible]
धापीन [illegible] गांधि [illegible] बुः। नरगमदन रसगुणिनी [illegible] तिच [illegible] वान [illegible]॥२६॥ [illegible]
गंडश्रोत्रि नासापुटे [illegible] चरण [illegible] स्वपी मे॥ दरविनमित [illegible] स्थूलया [illegible]
याच [illegible] रदशिखा [illegible] स्थूलनालिः॥२७॥ अनवरत [illegible] कुंतिगंभीर [illegible] स्वर [illegible]
शरीरा [illegible] कार [illegible] वोदरोष्ठी॥ त्रिजगत मदनतापा [illegible] रापिंजरा [illegible] मदनांबु [illegible] यशो
गुड माया॥२८॥ अतिबुक्कुतर दो [illegible] षा [illegible] नी दंतुरा [illegible] वसति [illegible] विसंस्थेरं [illegible] लेर्गुल्फप
शे॥२९॥ अपानाग्र स्फोर [illegible] लघु कुसुम [illegible] कुंनास्याः [illegible] तरमतिज
लिनं [illegible] सुवाच [illegible] जोलज [illegible] दुष्टा [illegible] निदीर्घ [illegible] बाजान
[illegible] जघनचरणा [illegible] विभ्र [illegible]॥३०॥ [illegible] सुरतर [illegible] चनाजो [illegible] धना
[illegible]॥ मानादा [illegible] स्फुर [illegible] तिमिनः सहषा॥३१॥ [illegible] नम स्त [illegible] पृथुतर
[illegible] विभ्र नः [illegible] सुमांसल [illegible] नतः [illegible] दराः पावरा॥ [illegible] भतन [illegible]
न तुनाश्वा रक [illegible] दराश्नां नश्विन [illegible] बुजद नस्फा [illegible] साचिवा॥३२॥ [illegible]

त्रिंस्तपदकुमारमदुगिरः पीडासह स्यागिनो निर्लज्जायतचूर्णि भागरायुतवरीधान्वयः स्त्रो॥
धाः। मध्यांते सुखिनो विशिनवपुषः संत्सारमोदाधिकाः सर्वस्त्रि कनमानवांगुसमितंप्रि
गेवृषाविकृती॥२२॥ वक्र्त्रौ चंचलैर्धरा धरवंदि स्वयंतदीर्घः [illegible] पीवरकर्णाग्रा
जनुनास्थूला न सौ [illegible] कुत्सितांगमानु सनवादी [illegible] योदीर्घरयार
विजोजलोचननुपः [illegible] निद्रालव॥२४॥ गंभीरास [illegible] रागिर कृतगा [illegible] केशिन
नोदी [illegible] प्रमदारता [illegible] तेन [illegible] धाला [illegible] निवनीतपीतवरुत्न
द्यारसमरांबुद्रावासिगे [illegible] गुले निगदिता [illegible] समोरु स्वला॥२५॥ ठंकोपस्व
प्रलंबमाण [illegible] निचारेपि लज्जायत॥ [illegible] मादि नातिलमुत्ते माधमजेदलः॥२६॥ जो
व्यमानवक्त्र [illegible] निचयाम्पतः॥ नसंत्र रेपि बाङकुल्पालूलच्चांनि धर्मावस्येनु थः॥२७॥
ज्ञ्कोयुगणपता [illegible] यामवक्षासुत्रि यापिवा। तामपिनायसपत्रिः सिद्धला [illegible] याम॥
॥२८॥ इति रसरहस्ये सर्वजिदजा [illegible] नायिकासामान्यलक्षणं नामतृतीयः परिच्छेदः॥ ॥बालास्यात्षोडशा ५
ब्दात्तदुपरि तरुणी त्रिंशतं यावदूर्ध्वं प्रौढास्यात्पंचपंचाशदवधिपरतो वृद्धतामेतिनारी॥
दृधा [illegible] तन्वी [illegible] निम्लकु [illegible] कथा [illegible] गोरी [illegible] वा
सितरातिर [illegible] प्रौढ [illegible] घनाः स्यु॥ [illegible] संकोणं [illegible] मध्यमास्यादयं [illegible]
दितस्य [illegible]॥ बाला [illegible] बास्यरता [illegible] प्रौढा [illegible] नरमोहन [illegible] तो [illegible]

दिपला [illegible] सुरसाहारा दिसंपादनैर्माना थर्यवृथा [illegible] शतीवा
लाकु [illegible] रम्यावलीक निदानसोथ तरुणी प्रौढा [illegible] स्मर [illegible]
भिः प्रियवा [illegible] रणाया निह [illegible] वशा॥ [illegible] ॥ मूढा [illegible] धि [illegible]
मधुरवचाः [illegible] प्रौढा [illegible] धि [illegible] युवति [illegible] शिशिर
गके पित्तला स्यात्॥ [illegible] शीता [illegible] वृद्धा [illegible] वात [illegible] श्लेष्म
लापि [illegible] शिशिर [illegible] पित्तला [illegible] अचिर
लघु [illegible] काल [illegible] प्रम [illegible] हार [illegible] सत
तशिशिरकाल [illegible] वर्षा [illegible] सपदे [illegible] प्रवि [illegible] ॥पा॥ पु
त्यच [illegible] नील [illegible] मा [illegible] पवा [illegible] कार्या [illegible] प्यनु [illegible] वरि
[illegible] सुख [illegible] पि [illegible] नि [illegible] नुसाया मा
निनी [illegible] स्थिर [illegible] सुरूप [illegible] शिशिर [illegible] विरागिनार्यामा॥ [illegible]
श्लेष्म [illegible] तिश्च [illegible] मा [illegible] स्यात् [illegible] नगौर [illegible]
पा [illegible] कुपितार [illegible]
प्रसन्ना [illegible] शिशिर [illegible] धिकवरी [illegible]

मिथ्याविनीवक्रुरालाधरुत्री इते निश्चलम्प्रकृतां ॥ इति पिन्न प्रकृतिः ॥ पवनप्रकृतिमाह ॥ ७
भ्रमणरत्तास्यावृन्स्वरूपाचाल ॥११॥ दवदग्ध [illegible] धूसरकृत्स्नावक्रुजोजनाचरू
भिर्तांगा ॥ स्थूरतो ॥ रूक्षकेशाग्रचिरनाद्रुपानिनवनयना ॥१२॥ गीतिकान्तस्फुराकृ
दिनवरांगा ॥ मानारी ॥ [illegible] सलेनचसंबी ॥ प्रकृतिरेवा विकृष्या ॥१३॥ मृदु
सुरभिशरीरा सुप्रसन्ना ॥ व प्रचुर धनुधनं [illegible] ॥ कामिनी देवसत्वा ॥ वह
तिसर व चित्रोदारकर्मा ॥ विप्यर्त [illegible] नरसत्वा ॥ विपतना पवारस
स्वासिनवकुतरयाज [illegible] विशाखा [illegible] पतिनयनव्यापुक्तानागस
त्वा ॥ व्यपगत [illegible] कुलकोधानपत्ता वयाता स्फुरितानिरतिलिखी यापुणाय
सत्वा ॥१४॥ दृष्टिमुफल्लप्रयतिप्रबलकारीनतिकिद्यमानिविपुलाकुलका
कसत्वा ॥ उत्कीतदृढकरजदन्तरणप्रसक्ता ॥ स्याद्दानन [illegible] स्थिरा वतद्व
त्रि ॥१५॥ अप्यतुरोषा [illegible] दिव्यवशात्सर्गे मधुपादिष्ववृद्धरागा ॥ संगीत
श्रीला कुशला [illegible] घवसत्वा युववीवदती ॥१६॥ मानोन्नता [illegible]
कुकप्रकृतिपरिगात्री ॥ शुकवनमधपफ्लला ॥ दिविपुरानसत्वा ॥ प्यापृष्टा विपुष्य
वक्रोवनवनाचनारीरक्ता ॥ विरञ्जकरलोरवरसविकासा ॥ प्रियामा [illegible] का ॥१७॥
मकुवाम्रगोगंधवयरू नरदेवनसात्विकाबा ॥ तोबृकयोवनदशाद्वयमावरात्री

सिमंतिनीं कुचलाभवदंतितन्त्रा ॥१८॥ कुंभाग्रेदशालीक्षणे विचर्चितेन्तः कृपोदरमस्यवत्
धमिष्कुं ज्ञकुसमा चित्तोपिमलतिप्राप्तोतिबंधुं पुनः प्रवृद्धनोबृनतः स्तनोपकृत्वा श्रो
णितटंदरपत्तनीवीचस्खलतितिहितापिसुदृढंकामेंगितेयोषिताम् ॥१९॥ अथैसोनागपरूप
परिताम्सगुणानुरागसंकीर्तनेनदयितस्य चलस्वसाध्याम् ॥ संबंधिमित्रसुखदर्शन
दत्तद्दूरनोषुपरोक्षमपि कामयुणोंगितस्यात् ॥२०॥ नातोचत्वे वयसिप्रमाणेप्रधान
माकुः प्रकृतिवर्द्धनाम् ॥ तथैवतासांपरिष्वासन्तुः कृत्स्नासुताघाः इतिनो विधेयम् ॥२१॥
स्यातंमपिरमंदिमंदिरेषुवसतियाशास्त्रवसंगतिगृ [illegible] शुरूपसांनिध्याचनियुर्यावासे
विदेशानयाः ॥ संसर्गः सत्पुरूषानी सः हृदुद्वोनिजायाः तातिर्यत्सुवादवनानि [illegible] सव
नेनाशस्यहेतुः स्त्रियः ॥२२॥ दारिद्र्यादसारहलुतामलिनेसा [illegible] पर्य [illegible] लात्तनापाहषाद
चरिलुतापुणयतो [illegible] विषधा [illegible] मिथ्यादोषविप्रभ्रमनाद्दतिशयाघोगाद्दियोगं
तथा ॥ [illegible] सिद्धं [illegible] नयतं वैराग्यमुच्चैः स्त्रियः ॥२३॥ नंपरूपतिनाम्यनंदति
दूतंमेत्रेः प्रतीपाह [illegible] तायोणहानिष्पानि विविदरेमाध्यामिनं चुंबितो ॥ नाप्नादिव
तिमानमीषतिवचः [illegible] चरनोविष्टः ॥ स्पर्शा [illegible] नेस्वपिरूपपातीशय्योविरक्ता म
नी ॥२४॥ अथ दृष्टकनतनुर्नवि [illegible] वनीनुसप्तयाणी तयामासे [illegible] ददाति [illegible]
एमासग [illegible] स्वपम् ॥ विख्यानावि [illegible] सगमवि [illegible] ज्ञाऊरना [illegible] नसामि

धामदेशागास्यदेयोषितः ॥२४॥ प्रायात्तदनयुद्धेयोषितेः [illegible] नावाक्यमपि चरमाला रु
त्रियोगं वसंतो ॥ धृतमुरुतर [illegible] चित्रजातं चित्तीये नवति [illegible] परीतः पुरु
कृतार्थः ॥२५॥ ॥ इति श्रीरतिरहस्ये सामान्यधर्मो नाम चतुर्थः परिच्छेदः ॥ ॥ प्रायेण ना
यां पुरुषचरितैर्भा [illegible] नेपुरुषाभ्यसंते ॥ इदं विज्ञायतस्योपचर्याथ [illegible]
वनार्यः ॥१॥ अन्यापि [illegible] यत्याद [illegible] प्रतीत ॥ श्रोचा [illegible]
बलानुरागापूर्वं [illegible] च [illegible] ॥२॥ कस्याचिन्नानन [illegible] दरादौ दुःखाश्रयेभ्या
पितानिचित्रवृत्तिः [illegible] समति लधैर्यः श्रयोपिचेयज्जिमनेरतेषु ॥३॥ स्वान्य
मतिचपलं [illegible] ततस्त्रा [illegible] गतं विचिंतयतः ॥ धृतरागनपयुगतमपि जपुरुषस्य जातु
नोगतनि ॥४॥ [illegible] पास्लेटके [illegible] ॥ विधो च नृत्यैः [illegible] दुपचायितेयः ॥ विना
प्रनाधे विषये [illegible] स्यासि त्रिप्रीतिमुधे दाहरंति ॥५॥ ना [illegible] सनो नो विषया
द्भवेद्या संकल्पमात्रादतिमानजपनाया ॥ [illegible] वस्पनार्थाश्रयथोपदिष्टं स्त्रीपुंसयोः
श्लेषणंचुंबनाद्यो ॥६॥ साद्दृष्टपतो [illegible] विधानां प्रत्ययोत्थां प्रवदंति तज्ज्ञाः
कृत्याघतेया विषयेः पृथानेः प्रीतिं तुतां वैषयिकं वदंति ॥७॥ [illegible]
तंयदेनघोजात्यवर्ण्यो [illegible] विशेष ॥ यद्वन्नामाणं स्फुरदेसात्म्यं तदा कल्पयाप्र ॥१२॥

यत्रानुपेया [illegible] ॥ त्रिप्रकारा नखदंतचुंबविधिषु स्त्रियो मध्यदेशजाताः सदा ॥ तथाविधा चित्ररता नु
रक्ता अवंति बाह्लीककुंभात्तवंति ॥ ॥ आश्लेषलोला नखदंतरत्ये विदग्धपतेः स्पृहति चालिंग्या
ते ॥ [illegible] चुंबनस्तार्थ चित्रास्याः न्मालवीयापितथाविधैव ॥ ॥ इरावती सिंधुषात दल
रविपद्धि [illegible] दंतरा ले ॥ या चंद्रजा गा नरपार्श्वनार्यस्ता अपरिष्टेन विनानसाध्या ॥ ॥
मंदा निघाते नखदंतरूते [illegible] परिरंजतो ला ॥ प्रचंडवेगा सुकुमारगात्री रतोत्स
वेन्तृप्ति सार्तनारी ॥१२॥ वारिच्यमुद्रामपि [illegible] जवत्पंना चारुरतानि ॥ प्रयुंजती वाडवा
मर्म कामी [illegible] पुरंध्री [illegible] ॥१३॥ विम [illegible] धनेनदवंतिह [illegible] तिदृष्ट्रम
ते ॥ स्त्रीराज्यजाः [illegible] नार्यः प्रचंड [illegible] वंति ॥१४॥ सा [illegible] विलज्जार [illegible]
[illegible] सानुरक्ताः ॥ [illegible] पाटलिपुत्रजाः स्युः ॥१५॥ आंध्र
[illegible] वंति [illegible] विन्यासरति लज्जा
प्रथमरतेपि ॥१६॥ [illegible] दोषपरा [illegible]
वेगताजः [illegible] ॥१७॥ [illegible]
[illegible] गोडी [illegible] चनितं [illegible] ॥१८॥ [illegible]
बकुरा [illegible] ॥ [illegible] रगे [illegible] स्या [illegible]
पथनावापुरंध्री ॥१९॥ विविधजनविज्ञासैः [illegible] प्रहार [illegible]
रिसप्रज्ञा [illegible] ॥

अविरततरयुद्धा [illegible] वीतलसत्कं वदति [illegible] ॥ [illegible] ॥२२॥ इति विभ्रमम्
यद्दृत्वे देशसात्म्यं मुत्तो [illegible] विनि [illegible] पामुत्तरयपुत्रिषेव ॥ अनुमते च मनुष्य सत्त्व च सा
त्म्यं तत्रेयुर्जवति [illegible] सत्त्वमा [illegible] स्वप्नबलीयः ॥२३॥ इति प्रभ्रमां सात्म्यं च वेगस्य ताव
दृशो [illegible] वसात्म्यान्न देशः स्वकामप्रवृत्तिः प्रवृत्तिस्य प्रयुत्पत्ने [illegible] घरते [illegible] ॥२४॥ ॥
॥ इति देशज्ञात्वा घिक्कारः ॥ [illegible] कामुकस्य [illegible] पन्नास्पि चालिंगनपूर्व [illegible] ॥ अता
तन्नानुस्मर [illegible] नन्दा न [illegible] पुन [illegible] चुम्बननुत्पात ॥२५॥ इदानीमालिंगनमुच्यते ॥ ॥
यो [illegible] पितः [illegible] गतायाः [illegible] पदेश [illegible] नरस्य ॥ गात्रेण गात्र [illegible] तत्र तत्र [illegible] आलिंगनं
स्पृष्टकमेतदाहुः ॥२६॥ य [illegible] नी [illegible] विदव [illegible] तोप विष्टपुरुषस्तनास्थौ ॥ विनत
नी विध्यति [illegible] गात्रे [illegible] मुच्यते तत्र ॥ रूपापत्रो [illegible] वा दो [illegible] मितरघनेवाय
रुघतोः स्यापिचिरसंसगः ॥ [illegible] कृत पुनरे वक्रनिपाडनोत्पीडनसंज्ञ च ॥२८॥ अ
चपलो धार्य [illegible] तरत्वा [illegible] पतिरजली ला ॥ सपन्नरत्मार नुराग [illegible] वृद्ध
स्तावष्ट विधोपदिष्टा ॥२७॥ प्रियमनुसृत वल्ली विभ्रमा वेष्टयंती द्रुममिवसर जोगा
न्नतसीत्का तदीयत् ॥ वदनमुदितलेखा [illegible] चुम्बनार्थं भयति विततांगी [illegible] ॥
ततत ॥२८॥ रमण चरण मे [illegible] स्वक्षिनामपरपादेनाश्रयंती [illegible] ॥
नितमथ [illegible] जं कंपृष्ट तोस्यापयंती ॥ पुनरपर [illegible] प्राचयंती तदने ॥२९॥ नरुणिवेद्र ॥८॥

[illegible] चुंबनार्थं घरो [illegible] लिखति नारी [illegible] चिरस्तं ॥ [illegible] पति नधि [illegible]
कमाश्लेषयुगं सपदि न चकथनीयाः [illegible] श्लेष त्तदा ॥३०॥ असरत [illegible] श्लेष
[illegible] वित [illegible] नि [illegible] घनबाहु व्यत्ययं स्पर्द्धयेव ॥ मिथुनमथ मिथो [illegible] यते वि [illegible]
[illegible] निगदन्ति [illegible] तंदुलं तन्मुनीन्द्र ॥३१॥ अभिमुख विष्णा मु [illegible] षिदके [illegible] ॥
[illegible] चिरगाढा लिंगनो वक्ष [illegible] ॥ प्रसरदसमरागः वेगनत्र्य [illegible] विशत [illegible]
योगंद्धी [illegible] दाहुः ॥३२॥ मोनसि [illegible] माने [illegible] वायाः पीड्य
[illegible] युग्मे ॥ दरदलित [illegible] मुनिमत [illegible] ॥३३॥ ज
घनक [illegible] ॥ [illegible] नारी [illegible] ॥ [illegible]
न्य चुंबन [illegible] विधिः [illegible] ॥३४॥ [illegible] मितु [illegible] विषां तीव
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३५॥ इत्यालिंगनानि [illegible] ॥ [illegible]
सामुखा [illegible] ॥ [illegible]
व [illegible] ॥३६॥ नमिन [illegible] प्रियम [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥३७॥ रमण [illegible]

यो तः। परपि निधाधरे स्याद्येया ॥ तस्यान्तिक पर्श्व नदे नत्वन्तः आयपियो ॥ [illegible] ॥ प्रवि
तिचुम्बनं हि दये रसं संस्पृष्ट्वं स्वीकाम तिमुखम [illegible] घन्य [illegible] सहोत्था ॥ अथ प्रमप
जोऽकस्योचै वायो नयेन धुनाति परितस्याची नावतस्री गात्र्यायान ॥ ९५ ॥ इयमिद मनुप
स्वयारूनः प्रीतिकास्यं विचरति मध्यतिकाया एव हरण गुली स्यां [illegible] दरस [illegible] स्याः प
ध्येनस्या निकर्षादिं याति [illegible] निरस्याद्वा रें उत्तरोत्तम ॥ ९० ॥ पपि नितिक्ष्व [illegible]
नोऽस्य हस्ताच्ची मुखे पुरं दनवासः संपर्क संपुटेन ॥ पुरा पदियः [illegible] नेचुम्बनं संपु [illegible] नि
दंत तरवस्रजिक्षादरलोन ॥ ९४ ॥ मदुस्य नयपीदितस्य ध्विनि चातिशेषे [illegible] यितपद पूर्व ॥ [illegible] चुंय
नतत् । यदि स्तु चिरमानितः प्रेयसी मयसुकृता है । सिद्धसदानिद्राचुम्ब तिभाण नाथे ॥ १२ ॥ कृष्यत
मपिविधिः स्यात् चुम्बनं प्राति बोध्यं नूचितनपरमेन तच्चुम्बनं [illegible] स्याम् ॥ अतिनव
स तनरागं यो जिते दर्पणादो प्रतिकृति विषयं च चुम्बनं पुंश्चितयोः स्यात् ॥ ९३ ॥ प्रतिकृतिश्च वि
चित्राश्लेषणं चुम्बनं च क्विनो ॥ एवं यथि निमितरमा वेतत्त्वसंक्रान्ति माहुः ॥ ९४ ॥ इति चुम्बनाधिकारः ॥ ॥
वक्षस्यानूरो रुजघन स्तनपार्श्व पृष्ठ हस्तं धरासु नखस्य खरयोगयोः स्फुः ॥ अधान्यपोनवरते वि
स्तेच मानेपो प्रामदेप्र वसने विरहे प्रयोज्यो ॥ १ ॥ सान्येन वारदविधेरपि निर्नयो यं प्रम स अनाहि
शिखरतोलपति चेद्धयोः स्फुः ॥ वहिर्निस्नूताननस्त्रिन तामद्युतोज्वलत्वं नो रेवसास्फुटिननेति गुणान
रमनाम् । स्फुरकरे रवमगच्छ मनरवेः समस्तरोमांचसस्वरं वयाधनियोजितानं । अंगुष्ठना सु
नरवताडनोनखानांगंडस्तनाधरगमान्द्रु रितं वदंति ॥ ३ ॥ कोई चंद्रकं तिस्तन [illegible]

तं कस्तोस्मरवो वदति मंडजद्रेधुनी ॥ ४ ॥ स्यानं चनस्य सगानं ईक्षुकं दधोहृदिच्चां गलं परितरव ॥ जि
रवं तिसे रवं ॥ ५ ॥ अंगुष्ठंनं नखम [illegible] विनिवेष्य हस्तासर्वा गुली [illegible] हृदयेरूपा दिस्तन स्य ॥ यत्तु च
कूलति मुखमस्य नवं तिरेषा लतज्ञानमयूरपदं नं तदुदाहरंति ॥ ६ ॥ सर्वैः शारीरिपुतमिदं [illegible] जैः [illegible]
ये रस्य यन्निमजदलं स्तनानु पृष्टे ॥ ७ ॥ रेखा घना [illegible] चतुरोज घनेस्तु वाप्तमं [illegible] वासगामनोवि
दधुर्विदग्धाः ॥ ८ ॥ इति नखाधिकारः ॥ स्निग्धा त्विषः सितशिखा नति दीर्घरव बांरागः स्फुटाः सम
घना रदना प्रशस्ताः ॥ नैत्र मुखेत्तरदच्छदने च वर्ज स्था नेषु चुंबन विधेः प्रथितेषु पोऽयाः ॥ १ ॥ त
सोऽकलिंग मधरे विलसह कस्याद्युच्छूनं दत्तान वासस्रिवामगंड ॥ स्यामीजा मदयदोष्ठ विशेषयो
गा च्च प्रवालमणि रत्नपसनेनसाध्य ॥ [illegible] मध्य धरंतिय शरवं विं [illegible] द्वितयं [illegible] नः स
मसैः स्त्तेषु ॥ स्यात्वोष्ठिताग्र [illegible] विवलोमत्ता नलोरगलं च [illegible] न घनो है ॥ ३ ॥ खंड
अकेसन तटे दशनाग्र लेस्व्य स्या [illegible] जालं [illegible] तं चिमयेष्ये [illegible] है ॥ ४ ॥ तोत्तरो रदनो [illegible] र्वे सं
जस्या कोऽनुचवितमिदं स्तनम [illegible] ॥ [illegible] इति दशनाधिकारः ॥ [illegible]
रता [illegible] नामपंचम परिच्छेदः ॥ ॥ विपसद मलसुपिपुष्पदामवा [illegible] प्रस्त [illegible] धा
निकामीस्तुवेमावेषा ॥ [illegible] वियापा [illegible] तवरपास्त्रियमू [illegible] तत्र [illegible]
री ॥ [illegible] च्छ सिं ज्ञावाम [illegible] चलकचकचकां चिसंस्थाने [illegible] परेवं ॥ [illegible]
लिलितमा [illegible] तिरु [illegible] चेचु [illegible] वदर [illegible] ॥ ३ ॥ अतिव [illegible]

[illegible]

गंडे मालिका प्रत्य चुबचपुनरुपस्थितत्रिं केत्रालुतिकाचचूका छुरितविविस्तत नालि [illegible]
कः सुयाप तिदठ प्रेयसी चापयी च नीवी ॥३॥ यदि [illegible] तिष्ठ पयाहि रूपा लिये चुंबस्य [illegible]
मपि तिला प्रेतासे पीड्य [illegible] ॥ स्वमतिमु स्वमस्या ओगमालिग्य [illegible] त्या मदन [illegible]
नलितांचिद ध्यात्॥४॥ सरसि [illegible] मदन तः कोपि [illegible] तो गिली [illegible] लिनुया [illegible]
गोष्ठि रूका पः॥ इति मदन निवा [illegible] चामन [illegible] स्या च [illegible] तिशि [illegible]
पूर्वपूर्वः॥५॥ मिवसति [illegible] पनाडि [illegible] चुप्यो मदन [illegible] नाधंगु [illegible] ता
त्ता॥ स्मरति मदसंज [illegible] स्ताच कामा तयत्रं दूयमि [illegible] वनिना [illegible] तिर्दिशीति॥
मदनमदनरं [illegible] तो नास्ति नं स [illegible] मद सिर [illegible] ॥ वसति मदन
रैधस्यो तरे नास्ति पूरं सज लेपरिपूरणी पूर्ण चंदतिनाडी॥ [illegible] निवसति बुद्धनाडी
चक्रमन्य चप्र धाग [illegible] तयमि दृत्रि [illegible] कुत्स्त शास्या विहि॥ वरिवर फणि त्रोणा [illegible]
कामो कुचा घेरस्तामम [illegible] कुचा स्वायोगत्रेदा त्रिध्यानोः॥८॥ शिथिलय तिव [illegible]
तर्जनी मध्यमा त्यामसु वचु दितनाडि [illegible] त्रवी चायपेट॥ रतिरुदन स्चचुंबो [illegible] ॥१०॥
पंडु स्वापचारै विलिसं तिमदरा [illegible] यंत्रयो गविदध्यात्॥९॥ इति कृत्रिसलिंगाधि

कारः॥ नृत्यस्यात्यवचासु चूतवा घरतः॥ प्रमदां कलयन्मदां मुदितां मदमंदिरमानसत्तान
पति। [illegible] विधिं विदधीनपतिः॥ [illegible] धुग्यु [illegible] नी करांग्यादिसं मिलितो स
नवेलकरणं विरलो [illegible] नवमतं करणात्॥१०॥ [illegible] चरते घरयत्प जनं नघनं प्रमदाम
दनाकुलित॥ धवतु [illegible] विपा लपति प्रगु [illegible] सान विवसति स्वपिति॥११॥ [illegible] त्रावण तिर्य
गवासित नं [illegible] ताननतनित्य पिपंच विधं। स्फुरतं [illegible] मुनतिनाकमतः [illegible] यया तिवि
शेषमतः परत॥१२॥ [illegible] नरते [illegible] वयेत्र [illegible] तेनयमु [illegible] ॥ [illegible] चतुष्टवन
[illegible] दितंपु [illegible] विना नयति॥१३॥ [illegible] नितयो [illegible] वनवे [illegible] नरो [illegible] गत रु
सुगम। नष्ट्रा [illegible] नरि नायादि पानितदा [illegible] सनागरि [illegible] ॥ [illegible] सुगम [illegible]
करर्ऽवस [illegible] चनंपरि [illegible] वृ [illegible] चारु। [illegible] गति [illegible] युगत [illegible]
के मिदं [illegible] रागत॥१५॥ यदि [illegible] युगं [illegible] युगंदधा [illegible] रमणी [illegible]
तिर्वि [illegible] रूयुगा [illegible] मिदं [illegible] रागत॥१६॥ सरली [illegible] वर्गभो [illegible]
पुरको नवति द्विविधः [illegible] पार्श्व [illegible] सचपाडित [illegible] निप [illegible]
रयुगं [illegible] द्यथ [illegible] पुर [illegible] ॥ यदि पार्श्व नएव [illegible] रासम [illegible]
ति [illegible] मिदं [illegible] रागत॥१७॥ परि [illegible] युगं [illegible] पादमेव [illegible] नाम धरम॥ [illegible]
तिनगो [illegible] नयादि [illegible] रक्तिस्पापि वा [illegible] विरम [illegible] यादि [illegible] तत्र [illegible] युग सु व
गा

तेः परिरवनरोरत्नने ॥ [illegible] चरणद्वयतः ॥२०॥ मर्द्द निभी
नमे नपरूपसत्तावधसानुयुगं युवते ॥ स्कंधेयदित्व त्रितमिवमध्यः प्रस्तनेयदिसारितमुक्त
तिदतः ॥२१॥ चरणं परिनत्नयमतो नृपुरः प्रथितं तु विंदितु विदारितनूपुर ॥ जंघाईमघ्योमुद
चोईगत त्रियस्तोयुवनतेम दिश्चचितं ॥२२॥ यादिकं चितपादयुगयु चते नदुनाथिमुदं चि
तिवाकुरिकम ॥ अरवोनवतिप्रस्तनवतिप्रतदासमदायतितं च [illegible] ॥२३॥ जंघायुगलस्य
विपर्यतः पद्मासनमुक्तेसिंदुयुवतेः ॥ जंघे [illegible] विपर्यतस्तुत्तवेदिदत्तचनद्वपदंपयमार ॥२४॥
निजतानुयुगांतरनिर्गमितोस्य तु आयादिकं तमीनयते ॥ [illegible] पितमिव भुज
दितयेन च बंधुरितं कृतं ॥२५॥ तत्कृतस्त धामतेन नरदाफणिपाशमिदंमृतयोदिदिशः
अंगुष्टसमर्पितपाणिरसतो जंघायुगलं युवतेः पुरुषः ॥२६॥ नित्र कूर्परयोनिदधाति तुजोनतवं
ठदंब्लियसंयमनं ॥ भुजयो[illegible]ननमावदनंजंघामतिनं घमसोरमते ॥२७॥ विनमस्यतनो त्र
र्यदिकूर्ममिदं परिवर्जितमूर्द्धगतोस्य युगं ॥ यदिपीडितमरुयुगं च नवै विमतो हननं तो हि नि
पीडनतः ॥२८॥ छेत्रा मदनालिगतानि वदाम्यथलीयगदं सुरनद्धितयत्न ॥ मध्येवनितो हलनो
रुगतो नदितो मुनिनिष्कृतामुरुतइति ॥२९॥ अविनिघसमुरुद्वयं चमिदंयुक्ता मदिवापुरु
षोस्तननतोः परिरुन्निषि तिस्फुरमः मसनाजघयुपूर्वतनुः परिचिनमुरु ॥३०॥ स्थितामसितसु
तरिपादयुगं यदि कुं चितमेव नरव तेवत् ॥ जंघुनार्यमधोपुरुषोपि तया मिलनीतिनरा
विलयुग्मपदन ॥३१॥ यदि सुंदरि कृपणि प्रगतः स्वनरि उन्नयन्पुरुषोरमते ॥ नवतीर ॥१२॥

विनर्दितवनदिदं [illegible] सुखसगाममार्द्ददिवूत ॥३२॥ उक्रमेतदियुक्तसंगमेजेपदातमथ
चित्रमोरुनम ॥ स्तनकुंभमथवानियः श्रिनौ कुर्द्दगोयदिनदाचतुर्विधम ॥३३॥ कूप ॥ रताप
रिवेष्टयोषितोजानुवेष्टनकसव्यमथसूनान ॥ कुर्दितुमदमदस्यतोदनयोजयेत्त्वदिरजानुक
परम ॥३४॥ योषिदेचचरणस्मपृष्ठितेनाथतैवतरिविमाक्रयम ॥ त्रिशिगप्रियकूरस्वसुंदर
पादयोर्विनतलसंज्ञिवृंदते ॥३५॥ त्रिनेगराजपंजरेस्थिता प्रियसोविधत्त वृंठदोर्लतां ॥ मृ
पाशपरिष्टिप्रियः श्रोणी [illegible] नस्तनाद्दिनाश्रपा ॥३६॥ दोर्लतेस्वसितिसा चूतंता कुलायो
षिदेवलं बिंबमनताम ॥ चानने [illegible] तमिदंवादिप्रियास्वादधोमुखचनुः पदम् [illegible] ॥३७॥ न चूर्णिः
समघिरस्यवहनः स्वाह्यादिपरिसंस्थितः पुरः ॥ मस्तकस्तपुरानिजेपदया विदेतिद्रुटि
रूढवल्लना ॥३८॥ अग्रतोयदिस्थानेरधोमुखी [illegible] नुकंचुपवद्गुन्तरतस्थिये ॥ [illegible] गतस्तन[illegible]स्य
मस्तकामुखसत्तास्पिजमस्योमुखीस्थित [illegible]
नमुच्यते ॥ [illegible] ॥३९॥ कातिनिलंकवस्त्र [illegible] नोरन्नुचक्रत्तेकरिवदे
दरुपटवंविद्राप्य वल्ययत [illegible] यमेनपर [illegible] वपिगदाकुजा [illegible] संपदोपय
वामुद्रावपिमदाकुजाव [illegible] पदोपपदस्ताद्वविदुः ॥४०॥ चित्रपंचविविधरस नापि नादि
गयोनिपरिवर्जनाविधिः ॥ मंदपीडितवद्यारभयान [illegible] धनोमतिक्ताम्नयोजिता ॥४१॥
कुर्द्दतो [illegible] पदनाप्यधस्तपापीडनारुनमघहनोविधा ॥ मनस्पार्कजनितंव जिनि
नगयोजेयकरघ्नतंधजंभुमान ॥४२॥ वनस्ता [illegible] पालंड्यात्स्पात्रनस्वपारिपांडयेत ॥

अस्त्रता वपुषि मीलनं दृशो मर्दनासवति नां च लज्जते ।।४४।। [illegible] स्तमाध धुवति दे तिवो
वदत्य जितुं सपदि संघाये दिति ।। श्चेषु ध्या भ्रु मि [illegible] तेया वायोषि वा चरति पो रूपा
न मः ।।४५।। श्लेषयेत्स्व जघनं घन मुद्रः आलतेति गरमां जिं ताकुनस । तावसिद्धि समयस्य
स चिंतं वद्दर्म एनमनेतं सुरतं गत्म ।।४६।। च केवल मपति कुचयिता क्रिको जापस्व भुजश्च ने
मयुक्ते ।।४७।। आदितो घटितं मन्ने मेव वा [illegible] पातं मनस्व रेखे चार्पिते ।।४७।। सवते तः कृति
परित्न प्रोय दि त्रष रवे सिद्ध मुषितिति ।। [illegible] न चविदध्यापते सी तो मलो व्याधि सिस्मि नमुखें
वदेहि ।।४८।। पतिं जस्सि वी लिवा धुनाप या [illegible] किं सेव पुकृते सिमि महे ।। मिथ्याति
चुषित चोवं रण मुक्त [illegible] कुं तल विचुंवितापरा ।।४९।। सांजदो तिलजितं यथा कुन्त
कर्णा शास्वा विरसे हपाद्दि रो ।। सडा मा प्रच चविं [illegible] पात बैनअपुरं चयतये दिसक्रने ।।
नर्षि मेति यदि नेवमप सो आचरे कृ दितमं गुलीरतं ।।५०।। कुतिधम जि कंरी नरा कृ रीहस्त
चोऽप्य म पल्स्तवं विधुः ।।५०।। स्वदिरस्त विदि तस्त पस्त्तो मधूनि प्रसूतकः कलाकृति ।।
योऽरयेन्न विपरीतमो हनेन तनप्रसव पुष्प योगिनी ।।५१।। गलि तीच दरितोच
पीवने रां कन्यकां प्रतिकुर्यां च वर्जयेत् ।।५२।। मोहनं महत्तपु भ्रमुच्यते बुधैः ।। तस्मा ।।१२।।
ताडन मिद्धां मम चिरं ।। आत्रिक्रम यौन क्रसितं च विधमुच्यते बुधैः ।।५३।।

ताडनेस मतता पस्स्त नेतुस्सि ना प्रस्त तके नचो दितं ।। पार्श्व पृष्ठ जघनस्तनो तरे मूर्द्धि
तेषि मदनस्य सम यः ।।५४।। कृत तस्त नितहं चुते तपा तु तां च तस्य सितरो हनादि के ।।
मुच पीडयत्र ह्रा जीयय चालि हादि पिति स्वा हू तं विदु ।।५५।। तच्च लाव प्रपात को विला
दं सद्धे विह्व धौरहत कोने । विखितं प्रहरणैः प्रयुज्य ते लन्यरापि हत निष्पने बुधैः ।।५६।। कृ
ष्ण पुच्छ रति वं हना लिप्ततं स्तनित निन्दा पवन। वंशा विनर वचं स्रक् तं वदि रपात
वज्रकृते ।।५७।। प्राभृतादि । सा पिसी कृत मिहा वरत्नकु ।।५८।। तच्च चेद्भिव दने पृष्ट दाता ।। उप
सूत्त न कृ रस्क ता । कृत थुव तिरि वरे सुरं ताड्य मव सितशो दने पिचा ।।५९।। सत्त्व रंस मन
सेन ताड्य दास मां लिस घ नेस्य पार्श्व योः । राग पान समये नितं विनी हंस जाव कृत
समाचरेत ।।६०।। नैति स्वि सिति निः स वेर पूत्य मे दि नो नस्स मयेन नितं विनी । अन्यदा पि वि
गनाति निःस ह्राः कृत के जवती विरता ।। [illegible] चारितं तत्र रागमाय थाक्रमं तु बुधा
वापि तथा रत्ना हृव ।। [illegible] नातु पश्यतः कृ तुस [illegible] नमा भि [illegible] यो वि
६२ ।। तीव्र मंद मुप चार मा [illegible] दापविष्ठ [illegible] दर्शिना ।। [illegible] निपुणमधि
वित्त धा ।।६३।। ।। इति [illegible] रताधि [illegible] प्रारेयन्ना [illegible] परि च्छेद ।। [illegible] ।।१।।
कृत्कायसा धयन्सा [illegible]
शांति

वासः श्रीड्रितादौ निमे नीनुधमसमधिकान्यावकुर्वंसिसौ नः ॥१॥ कुवलयम
दृक्को निःस्वणगौर प्रतिवा कुन्तरणानरव कुलि [illegible] न्ध रक्तान्तथा [illegible] ॥२॥ समृत्द
परयुग्मास्वल्पकुकरचल्पत्वङ्का कमलकुलक [illegible] काधि [illegible] वा पाणिपादे ॥३॥ अ
कपिलकुवरस्त्वाना [illegible] दरास्या ह्यरणाविधिर्कुकन्याथ स्वस [illegible] सारा
बाहिरा पिबन्द्र [illegible] हृश्यतेयावसुता [illegible] समनास्तौ कुथा वक्रयोनि ॥ अ
गिरिकरुनदिनी नौनामा [illegible] पारि [illegible] नुव्यानन [illegible] गात्री ॥ अ
धरमाधिकरूर्ध्वकोटरे पिङ्गलवानपनमयव [illegible] कर्कशे पाणिपादे ॥४॥ स्वपि
हस्ततिरोहत्यवयाकोठन पिस्तथनमापिपूतिवाड विभ्रुवी श्मश्रुल्या वा ॥ विषमकु
चकुगावा वामना [illegible] कुदशनपरुषा किंद्री घुर्घ्र घातिदीर्घा ॥५॥ पिटकुव
[illegible] वालोमशाप्रा [illegible] परिसर [illegible] पयारुचरोध्र ॥ नमणविधि
पुयस्याः [illegible] तूलवापा तति [illegible] कोगन्द्र्याचातिरेगा ॥६॥ नवतिसम १३
धिकास्वस्यादजायुष्ठतास्या स्तन्दुपरुसा निरन्या धीयतनमध्यमा वा ॥ नाभिका वा ॥
नयादि वरणा [illegible] कन्यकावडनीया ॥७॥ अथ परिणयरात्रौ प्रक्रमेनुवादि
वित्रिरत्त्कु [illegible] नीपुरस्त [illegible] नाता डुग्राति ॥ त्रिदिनमहनिधाश्रल्वपर्वनस्या
हृदयमननुरुध्यस्त्र्य [illegible] यान प्रकुर्यात् ॥८॥ कुसुमरुडु [illegible] रासा [illegible] तौ जपाम्

स्वस्पतां चव्ययसा प्रतिदिनमस्य कुर्यादस्य वाज्ञानुस [illegible] ॥ अपनवसित विधाने स्वस्य
निवर्त्स्यन्ती व्रतनियम विधिं [illegible] मसिक्को विप्र [illegible] ॥१२॥ स्वजनग [illegible] पेमात्य [illegible]
सद्वितीया न चिरमिरु [illegible] प्रेयसि त्वागतेवा ॥ [illegible] विरूतवपुषं स्वं दर्शयेद् [illegible]
प्रयमनु विद्यादान्चरेत्त्वोपचारम ॥१३॥ [illegible] दिवस [illegible] वतिस्यात्स्रुरूप सान्य [illegible] तिनि
पुणमतिपयान्न [illegible] त्वापराधम ॥ [illegible] विकृति [illegible] संप्रयोग [illegible] वदति वदति
व [illegible] रोषणं [illegible] चित् ॥१४॥ [illegible] मपि चरतादन्या [illegible] वयेन्नो [illegible] दाचित [illegible] विस्प
त्तीणाचरेत्कापि कदाचित् ॥ यदि निगदति दोषं [illegible] परस्या [illegible] सुनिपुणो [illegible]
दूषणैः सवयोघाः ॥१५॥ [illegible] दवनविहारे [illegible] नदानैः [illegible] पथा [illegible] वस्त्र
जातौ ॥१६॥ ॥इति रतिरहस्ये नायिकायुक्तौ नाम [illegible] परिच्छेदः ॥ नायाधिकारमिदं गदितं स
मासाद्युः [illegible] प्रमादाति [illegible] ॥ [illegible] पुरुषम [illegible] वायं [illegible] कादशा विषमे
उ [illegible] मानं ॥१॥ [illegible] चार्याः नवयौवनपीतिः प्रथमं चिन्ता संगस्ततो [illegible] ॥ निजाघ्र
[illegible] विषयनिवृत्ति त्रि [illegible] नाशा ॥२॥ उन्मादो [illegible] तिरिमेता: स्मरदशा [illegible] ॥ नाना
[illegible] योषितं स्वर [illegible] ॥३॥ [illegible] विषयः सा पितरद्वै [illegible] ॥ श्री
[illegible] पतिता [illegible] ॥४॥ पतितासस्वी कुमारी प्रव्रजिता [illegible]
प्रगर [illegible] ॥ [illegible] पुर्गधा [illegible] प्रायारदस्यन्ति [illegible] ॥५॥ [illegible] विज्ञिता [illegible] चिदे
[illegible] ॥ विषयगम्याषि [illegible] कुधाः [illegible] पारदा [illegible] ॥६॥ [illegible] संगता [illegible] पतिर
[illegible] बालेनं [illegible] तिवा मातिजि [illegible] नेत्री ॥ [illegible] नयायाम ॥१४॥

मराद्या। सुमधुरफलवृक्षालीबुकुषाँ सांप्रस्त्वलि विरपिकाना रोपयेदारिकायां।
।३। स रूपपि कुलयुजिः संभजे मौलिनीति। रूचितमपि दन्तमुष्ये परपमतन्त्र वेनिप्राप्ती
ति दिनमपि तत्तु नोज्जिनेवा विदध्यात्।४। स्वरमपि च निशाम्या मध्ये तावपूर्णमध्ये
तदुपरि रण सज्ञा संविशेदागतस्य। वरयुगलमस्य व्यालयेदात्मना सारी
सिवपरिवाध्यासो पि नाशो प्रसक्ते।५। ऽपनुमति मुपगस्याधिष्ठितान्यत्रपायात्
प्रायनमनु विदध्याद्भर्तुरूपानमग्रे॥ शायितामपि नमुच्चे न्नास्य मंत्रं विजिघांकृत
नियमविधानस्थेत चास्यानुगच्छेत्।६। क्वचिदपि नितन्तवा क्षारि नेवा जितिष्ठा
विरमय्य गिरमस्मै विप्रियानप्रयच्छेत। नविरल [illegible] मित्रयान्निकूरे वान्
पुरुषमन्यपश्येदन्यमेनविना।७। सुचरितबहु [illegible] समयमत्तिस
मीरणापादतो नान्यमूल्येत। नितन्तमस्तुलपानि [illegible] पर्यं दोष [illegible] मवहितचिं
ताचिन्तिताये चकुर्यात।८। [illegible] स्य पथ्यांगपरिवृरविनियोगांक
र्मणः प्रस्तवे शा प्रियतमपरि [illegible] स्य [illegible] दिरताश्च चिनिरवसरेतिमानं तत्प
वर्गो।९। परिजन [illegible] विनापश्यता [illegible] सारी सा सादरे वेदो॥
२१ गुरुषु परवत्वं चत्रेषु [illegible] स्फुटरुसि [illegible] जरंति चकुर्यात्।१०। प्रणा
यसरचरीत्रि [illegible] निजमिव तदपस्त्ये दर्शयेताप्रमत्ता गतवति दयि
ते [illegible] पवित्रगुरु विप्राचार्य [illegible] ।११। [illegible]

पदनाधिगस्ते यो पि सोयुक्तमाना। प्रथममिह सौखीति। प्रेमयुंजीवतस्याः समाधक्रमनुकु
र्याम्रा श्रयं येन धन्त्रो।९। प्रथममुपगतायां बालिकायां च चेष्टां तमसि न दुनितो तेसाश्री
नाथांतरूलग्ना। [illegible] रिरंसं पूर्वमायेन कुर्यान्मुखमपि वदनेन स्वेन तांबूलदानं।१०।
प्रागयशापद्यस्यान व्याहतः पादपाति। स्तदनु नयविधानैर्गारुयेत्त प्रतीपं। विशदमदु
विदध्यात्सु बनं न स्पर्शसी नूलमृदु निरपैनां ऽथ त्वादेः।११। प्रविदितमपि वश्छेन्नूचद
स्याद्यार्थे प्रतिगिरमनदत्ती नूयस्वानुरूप्या। अतमतिरूचितस्ते नच्चितोवेति एष्वप्र
निवचनपदस्मान्मूर्द्धि कंपं विदध्यात्।१२। प्रणयमुपगताचेन्मंदमंदं वयस्याः कुपित
पतिरहस्याश्मेरनुम्रानना स्यात्॥ कुपितमपि दितं दत्ते धीरसो नाम्पाहन्वादक तन्नपिव
यस्या चातिदध्यानिपस्या।१३। प्रभवरव [illegible] च सिसरव्यां नादत्ते वंदत्तानि। त्वविशादपद
वरगधिक्लिसीलां नविदध्यात्॥ प्रणयविंतु सने च प्रार्थितास्त्रगपुष्पधूपनयनि स्तमीवस्य
पयेस्रोत्तरीये।१४। स्तनयुगलमथास्याः [illegible] तायैः वृदतलमुपगुह्यंयावदान
यकर्षेत्। तदनु पतिनिहं त्या संभजे [illegible] समुदिवनरवबाणि [illegible] सितवयदीति
।१५। त्तनिमृणुपनिघो संगमानीययुंजन्नपि [illegible] विक्रमेवं तीप्रपेच्च कुर्यात्॥ नहवदश
नपदेस्वामंनुयिष्पानि वानेनिजवपुषि विकारं के चस्या नानेच।१६। तदुपगनितमि
पावेपस्तप्रस्त चातुमुखिमस्विसमाजे [illegible] षिधाय २५॥ इतिवपुराणचुंबेरं तसंवादा

यो क्रमाशी पित्रित चुतः प्रेरयेन्मेषजां च ॥१९॥ यत्त्विनरचित्तयं त्रां हृजयेच्चभक्तेना
धृवि भ्रूनेमा [illegible] रायै ॥२॥ इति विषमगमि ॥ रेकन्याकृत्यारद्रूस्य दिनियमि स्तु
मयोक्ता ग्राम स [illegible] मुखच्छ्या ॥२१॥ अत्रसे [illegible] पन [illegible]। नात्संतमनुः नोप्यन न। चातिप्र
तिलोमतः। सिद्धिमध्ये तिकन्यास्त्त तन्मा [illegible] साध्यन ॥२०॥ आनतं प्रीतिमा
नं तियोषितां रागवर्द्धनं। कन्या विश्र [illegible] त्रियाः सतां सां त्रियोजनचेन। सुभाविल
ज्ञान्विता त्वेनं परस्त्र कन्यामुपेक्षन। सोनिमिनामा [illegible] दिद्विप [illegible] सुसते ॥२१॥ स
रूसा वाप्यपक्वां तां कन्यां चित्तमजानतां ॥ [illegible] घोदेषं च गच्छति ॥२२॥
सा प्रीति योगमप्राप्य तनोद्वेगेन दूषिता। पुरुषद्वेषिणी वास्या द्विष्टा वा ततोऽन्यगा ॥२३॥
कार्यस्तानं निरापेक्ष्ये तोमां चपादर्वनस्थया ॥ समये निर्विकारं स्त्री प्रीतिकारं परम् ॥ ॥२४॥
इति रतिरहस्ये कन्याविश्रम्भणं नाम सप्तमः परिच्छेदः ॥ ॥ युवतिरपि विदित्यस्त्वाति जोमपं
स्वनाथे वचनरूदयवाये: पूजयेद्दिव्यं ॥ गृहयतिमपासौ चिंतयेद्दूरवाद्धः प्रतिवच
नमपीष्टं वेषमकुर्यात् सुशोभनं ॥१॥ गुरुषु सखिषु तत्संबंधुवर्गे च नर्तुं व्यपगतमा
यत् दनायावर्तस्वयं यथार्हं ॥ सितपरिमितवेषं केलिवीक्षा रहितो प्रचुरमदनमार्कुः श्रेयसे
जनाय ॥२॥ कर्वचन वामाक्षी नार्हता कुंदमध्यौ नरणसद्र पुष्पान बीजधर्मःसो ॥१४॥

स्यात्मतिप्रारम्भवन्निरुद्धेवा। प्रार्थितामपि रक्ता विमुखं दूषयेद्दोषयेत्वा ॥८॥ सामन्निरिदिंरसु रियमि
तिमिथ्यादोषेण दूपरघयितेन ॥ कन्नास्मिमित्रं कार्यं मरुदनया वासमागम्य ॥९॥ इनरूपलज्जा
गामिदं वृद्धेरणी लोच्यनरागतोयायात् ॥ करणे विचारणा सरूमध्यवासे वीरूपमनमथा न
पीलय ॥१०॥ निगमिधुलिः परदारान्नसिध्यायति वृ॥ वृत्तिपापपरिहाराः प्रागेव चिंतया। लनी श्री
प्ररोहिदुर्जनोमदनः ॥११॥ सप्रसवायपुर्व तनिषिध्य विषयस्थ योविषयः। प्रामस्वनां ववामः प्रवस
रनिन वैव दुर्वारः ॥१२॥ नन्वेव वपुष्पं पुरुषन्नामयतेस्त्री यरोपितां दृष्ट्वा ॥ अन्ययारेष विशेषः
स्त्री मां तति धर्मनिरपेक्षा ॥१३॥ अस्य पितापच्चपुंसाः सरूसा नरवी करोति सरूजेन। स्कूस्तस्म मया
कषेत्नी प्रवर्त्तनेवा न वा पुरुषः ॥१४॥ अपवमन्यत चक्षुसानां कामयते कुलना मयातियुक्ते
वा ॥ इति नरशीलं प्रायोनायपिष्ठ त्रिवारणे वृत्ते ॥१५॥ रथामनुसमं पत्न्या वपत्या वात्ये
मति वयस्त्वं च। वनिद्दर निवेदित्वं धर्मा पिक्षा निव स्याश्चित ॥१६॥ तर्कैविक [illegible] स्वाम नि
दोषता ने प्रियासुरम्यपायुक्तः। इयमस्यमान्निमि [illegible] न्हेत्योऽसामर्थं ॥१७॥ दुर्जस्योना
गरदति सुकृदिविपत्यापयुक्तोऽत्निर्शारमा। इति नामूढः पतिनां नीचः धृधृ त्रियोमध्ये दृष्टान्त
तः ॥१८॥ इति लघिमा सुकृदर्पित नाव [illegible] नखेदः। तेजस्वी निवर्तचिंताता स्याम
क्तिता हमि निजीतिः ॥१९॥ दूत्यामपि स [illegible] कारण [illegible] इत्युक्तं पंचवार
णवारण मनुरागवर्द्धनं [illegible] ॥२०॥ कार्यमुपायेयोगात् मनशक्तिरूनोर्थश्च योमात्रा निपरि
चयतेगरिम। लघिमापदमधत्ता गयोः स्वान्ता ॥२१॥ दवदःप्रणतेस्त्रासोआसनतो निष्
त्यासक्तः ॥ पूरसमुत्थितता षीरतितंत्रज्ञैः प्रियस्य वृत्तेनाचारः ॥२२॥ प्रषण [illegible] दासादस्यासिवृ

प्रोद्दामयौवनस्या वृद्धा आ बाल्यतस्ततस्सा वा: क्रीडनचे [illegible] दिना वृ विश्वास: ॥२३॥ कृत्वा
नशालियउत्सः व स्वैचिदं आस्यन् दोस्य: । अत्यंतगुणे [illegible] तृ: सख्यास घनं जेस्तृष्ट ॥२४॥ अत्र
मयासंतुष्टः सुजेगः स्वा विभिरस्य आमाना । परिवा [illegible] ॥ जस्ता हृष्ट: प्रातिद [illegible] ॥२५॥
दुःशीलोथ दुर्वरिः शठो वा वामुखि विकत्थन: । [illegible] निपुरु [illegible] ति स्त्रियं [illegible] निये [illegible] ॥२६॥
चात्रेयि वा परिस्थि रुगद्दाम सा गर्भो [illegible] एरसि [illegible] विख्यातः [illegible] चिकृत्यद ॥२७॥
संनतमहता विप्रा वा रसिद्ध [illegible] ॥ [illegible] स्थि ति [illegible] पार्थ्व विख्यातिनेयाव ॥२८॥
तरुण विरकुलगा वा निरपराधा । निरपराध परि [illegible] : [illegible] धांगा [illegible] रतापत्या ॥२९॥
परिहरे तिनापराधेपरिस्ता वा व्यचासपत्नी । [illegible] : बहुयाम तपति [illegible] वा बहुताम्पा दरिद्रा च ॥३०॥
न्यूनपतिबहुमान्या मूढ धवा [illegible] । कुलाकुलाता । ज्येष्टा बहुदेव [illegible] प्रोषितपतिधरी हृता
समाना । ति: ॥३१॥ नित्यं ज्ञातिकुलस्थितिरी । व्यालुपति: समा शीलस्सा [illegible] च ॥ [illegible] मावालेयता
घरिता मूर्ख [illegible] कारणं नेव ॥३२॥ सा यो वने निपुत्रा प्रहृति स्निग्धा च यापस्मिन् चारणं वि
रूपवा मन दुर्गं [illegible] रोगेणं सा यो कुपुरुष दद्वच्छी । बहु मदा रता [illegible] यन्न साध्यास्य: ॥३३॥
भंगुरस्या धिवा वा निपादे स्यादे शि [illegible] यस्या: । [illegible] नागसधमा वा [illegible] शति न [illegible] निष्टा चा ॥३४॥
नबाहुः सिद्धता माल्ल नो [illegible] किंगा [illegible] यो षितात् । [illegible] दत्तिवारण छेदा नरोया षिस्मृहि
ध्वनि ॥३५॥ तदनंतर [illegible] यवा के [illegible] पिंगलाक्षी वा नपुंस्त्री निति विदु: [illegible] विदा [illegible] डी
[illegible] स्वा [illegible] वतो [illegible] सृपया परि [illegible] । वृधा [illegible] चिता [illegible] स्थि दास्या [illegible] ॥१९॥

॥ दयिनी ॥३६॥ [illegible] या परि [illegible] ते [illegible] नी । सृपया प्रदर्शनि मिदानी [illegible] । [illegible] यो प्र
[illegible] प्र यवाचा नित्यं [illegible] यास्तु ॥ ता [illegible] नियोज्या: तद्विपरीता [illegible] ति: ॥३७॥ स्व ते
जियोगे कार्यं [illegible] पटः प्रपर्म ॥ [illegible] जलेरवो देव [illegible] प्रेरये [illegible] ॥
॥३८॥ केशाग्रेमन संगम मे [illegible] स्फे: छुरता ॥ [illegible] रागमस [illegible] न्य दूत मव
[illegible] यो: [illegible] ॥३९॥ [illegible] ॥ विस्रं [illegible] क्वा
कां [illegible] ॥४०॥ अन्या पदे [illegible] स्थिति: सोंति [illegible] ॥ स्याद
समस्या वचतेस्रगुप्या [illegible] मनोरथ [illegible] ॥४१॥ सुहृद्दिशो वालनाय । तामेवो [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] लघुस्प [illegible] ॥४२॥ बाल क्रीडनका
[illegible] ॥ [illegible] चार ॥४३॥ सृप्वत्या
नपित [illegible] कुपा [illegible] पनाद
[illegible] संक्षेप: ॥ [illegible]
[illegible] विश्वास [illegible] ॥४४॥ [illegible] स्त्रो ॥ [illegible]
परबुद्धि [illegible] ॥४५॥ [illegible] विदग्ध [illegible]
घा । [illegible] ॥४६॥ [illegible] लोक

यदस्या: ॥ अवनिपुरुषमासोकूयन्तहक्रामालंबयेसुकु... ॥५०॥ रुचिरं न चिरं याता व्यनक्ति
गात्रं पुनरन्तु विविनक्ति ॥ गुरुदोस्मिन्त मसन्नस न... रलमथवा विचेष्कृतमंदन ॥५१॥
क सवादंगतेष्विमुभालिंगति चुंबतेकृते। विं च्वि... चोमुख मविशपष्वरणं...
न्प्राय ॥५२॥ वदति न दं चिवसं स्थिति मनुसरति... जनोदीर्घं। मांपश्यत्विति ...घत्ति
विद्याद रत्यक्ये: ॥५३॥ पश्यति सदानं से... व्यानमादरति। नहृत्तं वसति सदा...पि
मीस्यांतिवृत्त सति ॥५३॥ ...संगसंगनाधि... विविचिय वि...नतनुते ॥ प्रीति पूतं चक्रूयां
तम्परिचारै: समं कुरुते ॥५४॥ नसदि... चचरणेन स्पृशत्या स्वामिकं न समादिशति ॥ विश्व
सती नन्स... स्नेहात्मस्य माचरति ॥५५॥ न ददाति तस्य दर्शमि नलं दारा वपाचि तानेन।
वितरति सख्यो... कुसुमापीडादि सालस्या ॥५६॥ निश्वसिति ॥ नीगतो चक्षति चिमं गुञ्जा
तिपाणिना स्वक्रुचे: स्वयच्छते च वसनं... नं चकुरुते ॥५७॥ व्यर्थं वदति सलज्जे
जनयति... निहंति कुसुमाद्यै: रुचिरं रचयति तिलकं सख्या: श्रोणिं च संस्पृशति ॥५८॥ ना...
...स्तति... च तिन दूरम गच्छति ॥ व्याजान् ॥ करचरणांगुलिव चदन स्विच तिक्षं...
जवल्ली ॥५९॥ अतियुवन... मावस्था मयं सदास्मने... दिनस्यलोकं नि नवं
चलाकृतम् ॥६०॥ इति दर्शिते... गिनाया संश्लेषं... कादिसमोऽस्यात् ॥ ...लिनसंकुविरु
...स्तनजघनसंस्पृष्टोदस्यान् ॥६१॥ प्रवर्तायत्राम... व्याजेन तत्र नीनाथा: ॥ अनुकूले
...नि मस्या: शिरसि हस्ता: सपुलकं दधाना ॥६२॥ अनुरागपेशलं चक्षुया दु... ॥२४॥

दर्शांवाच्यं कृतं ॥ समयस्त्सुरवी ममपीडं कुसुमनिमित्तं त्वनेवास्या: ॥६३॥ सुतनुक्षदनासरोयथु
रू: किं त्वकुणस्य फलम् ॥ इत्योषधादिप्रेण विधिषु व्यापारायदेना ॥६४॥ स्तनरवसयरोकृत्वा
पानादाने च कुसुमस्रगादे: ॥ करजरदनपदव्यां छिन्नमस्ये: पत्रादिकं दधाना ॥६५॥ अथसान्धा
परस्परिप्रौढभावादिसुखरसविचारात् ॥ सुचिरमनारप्यसांचिनि मन्मथगुरुदीक्षायाक्रमतन ॥६६॥
निबिडस्तनभास्विनि निछिनायोंबवसिरतयो स्रवंतिरागिण्य ॥ अतियुक्तास्तलालंत्यजति पुरुषं नता:
॥६७॥ इत्थानुसृत विषयाथत्रास्ते दूतीवर्ण्या । यत्रैव कामति पुंश्चेत तत्र जातोलंपयेन्नैव ॥६८॥ अतिया
रासातिनायानिवपरीस्थापयन्तत: ॥ आर्यागिरूत्पानियोगरति मार्वन प्रकाशयति ॥६९॥ दूतीसाध्या
॥ विषादत्तियोगया तुनाहृत्वे ॥ संदिग्धदोलायित चित्ता सासाध्यमते कृतन ॥७०॥ अगदीत्वा
प्यत्तियोगं स्वविशेषालंकृति विविक्तं ॥ याधीरादपर्यवति स्वेयास्त्सामाकुध्यते नेता ॥७१॥ नानिल
तिस्यहते त्तियोगं प्रणछेपं स्वासाध्या । परि... निस्सा । जिश्यकानमिलतिपुनरासगोरवत: ॥७२॥
नचतकुरागौरवत: प्रत्या चेष्टप्रदिचया... स्यात्पूर्वकृता तिप्रीतियालिप्सिद्धेव ॥७३॥
आधारितावस्त्सत्वं व्यंजते। स्पष्टमुत्तरम... यास्वा... यातांन्नारयति प्रथमं सा प्रथमसिद्धेव ॥
॥७४॥ स्त्रत्वा स्तथमपुनायाद्दस्वन्नानि नदपि... दुपातं । प्रथममपिस्त्री लज्जागादर्स्या नाधो
विप्रादना ॥७५॥ वीतयामप्राक्लीयापक्षि... एषा: ॥ स्फुरसो विधि: प्रोक्त: सिद्धारव
स्फुरा: स्त्रिय: ॥७६॥ ...सुतरोता ॥ ...तोत्ताप्य दमचेष्टि... चिंतयारूढरक्षानन्त ॥ घटय... वपा

प्रसंगात् । ब्रूयाद्विश्वासमुत्पाद्य ॥७७॥ रूपकूलाविशी[illegible]के तु तेषु च देशो नर्म्म ॥ धिग्देवमुचि
त विमुखं वताहूणपयति विडम्बयति ॥७८॥ इन्द्राणुरूपे वे[illegible]रुचेग: शाठ्यवसति ॥ रचिद मुग्ध: ॥ दा
सोपि तेन युक्त: पतिर्यमा: कष्टमित्याधे: ॥७९॥ पतिवि[illegible]परागवच नैवे रागं पत्न्यं वेदना ॥ पप्सि
बुद्धजे तस्या दोषं तत्र यस्तमे न पप्रवयेत् ॥८०॥ [illegible]य करुणा गमात्त: प्रीतिं कुर्यादिव प्रसंगेन ॥
क्त्वाघसौ मनस्य ब्रूयात् शाठ्य सुमुखि विय[illegible]ति ॥८१॥ [illegible]मल्प माति[illegible]सो युवा स्व
मसुकुमार: दृष्टि भुजंगी दृष्टस्त वस्त्रखिस[illegible] रूमारू ॥८२॥ त्वत्क्षिति त्विघति मुखुति संता
पत्तस्य हृनोपि दृवादि: । त्वं मुखचंद्र सुधारसमपथ्या तितामसौ ॥८३॥ स्वप्नेपि तस्य सुजंग
कदापि नैव विवादो रूत् । इत्यक्ते सा यदि सहृत्ते पुनरपि रेंगु: समत्वं संदृथ्य[illegible] ॥८४॥ दत्तम
हित्यादी नांश्वाघ्यहृश्री स्वगमनत्रियो रू: एवं पृच्छन्मानेय दर्शयितव्यस्तदीयश्चाकार: ॥८५॥ नि:
श्वसिति जं नतवा सचिंतनस्य दद्दाति किंचित् । वाचां तथ्यपि पुनरपि निवदत्ति कुर्थं साधुवाद
नी सवती ॥८६॥ दृष्ट्वा कुवीति सास्मितमतिक्रमबोपवधायति । एवं तिजोतन[illegible] पावने आ
ख्यानं दिशति हसितवानितति ॥८७॥ वक्ति किमप्य समंजसमित्यरूत्वा नतकथां जने । कि:स्वर
मिव च स्तवकि उद्धाटो साविति पेत्तत्रां ॥८८॥ हसति च तस्य विभारान स्व वान्नूपस्त्वसोप
हासे वा इत्यादार प्रव्रजनमालोकयेत्तत्तयुंज्यात् ॥८९॥ तां कुसुमकुसुमलेपनदानैरूप
वंदृयेच्चेन ॥ इति सुघटितत्व[illegible] वात्स्यायन विवाहोत्सवप्रायो ॥९०॥ उद्यानपानयात्रा ॥१४॥

लावता रघुकृतकुलहितात्मते ॥ चिंतितनिरत्यथ वा वेद्यमनिज्ञ रवतोयो यौ ॥९१॥ बुधे कुस्य
समीप्सामर्चियै वा रमतया ब्रार्यं । सा तु निसृष्टैवो कालिं गनो नीयया कार्यम् ॥९२॥ श्रोषं
संपादय तिस्वयत्तेषापरिमितार्थार्का । संस्पृष्टमा स्तु नेत्री संदेशा तत्र: ॥९३॥ दौत्यनि नेना
न्यस्या नायकमेत्यस्य च रूपगुणत्वाबाल् । ध्यानेन वेदयंती स्वार्थं घरयेत्स्वपंदूनी ॥९४॥ मुग्धां
नायकमार्थं धिन्नाधिश्वास्य पतिरूः पश्चा । अभिलाषलिंगदृष्ट्या तद्धारेणैन नायकं गम
येत् ॥९५॥ पित्रा यवकृस्व त्रार्यं प्रियोऽन्यया तद्वदायोऽज्ञात् ॥ पद्धरयति नागरता तां त्वार्थां दू
तिकां प्राहु: ॥९६॥ व्यर्थं पूर्वं प्रस्तुतमथवा दुर्लक्ष्यमन्येन ॥ यन्मुग्धया च याचित् ग्राहयेन्नौ
कौ वास्तु दूतीसा ॥९७॥ प्रातवृद्धा रमुतरपतिद्ध्यान्नायकान्नद्धत् । सदासी स्वस्त्री कुमारी
विधवे द्विति लिका च सैरंध्री ॥९८॥ मालिकुक्कुरजवकस्त्री प्रव्रजिता च विक्रेयी ॥ धात्री
प्रतिवेश्मनिका स्त्रिहत्वा वा दूत्य रता ॥९९॥ श्रुत्वा सारिकादयोपि प्रतिमाप्रायाविदग्धा
नाम । अंत: पुरमपि वै चिदाशं लिश[illegible] धेतसदुपाया: ॥१०१॥ प्रविशंति नप्रवाराखोक
दयनिंदिता नो सा: ॥ ॥१०॥ इति रति[illegible]पारदारिको नाम नवम: परिच्छेद: ॥ ॥
दृष्ट्वा नेक विधानि मन्मथशास्त्राणि[illegible]धान्यप्रोऽयं प्रांरूरसे स्वहा च निर्विद्यां
योगावली नां शातम् ॥ तिस्रो वै यद्यसंहिता बहु[illegible]नालोक्यशे वागतान्यो गाध्याय
नहमस्तु ज्ञनमतं बदता मिसंदीपन: ॥२॥ यूनोर्मि[illegible]नुरागा नरतां क: मोघिवसहि रति
केलि ॥ स्वरूपा धैर्यं वितागादनुरागश्च द्विधा नेवति[illegible]दानितदमान्यया मा[illegible]त्ति द्विधा

रुद्रः॥ तस्य नक्षत्र नामितितिं त्रोषधिविधयं नच्यंते [illegible] कामेश्वरी॥ ह्रीं दंतुःर्ह्रीं [illegible]
मदन द्रवेद्रामहत्पिलि ऌ स्वाहा फट्स्वेस्वा॥ ॐ रक्ता[illegible] कमुखी रक्तास [illegible] यस्या [illegible]
पं दत्वा मिसा वश्यं वशमायाति॥ अथ नासि ध्याति [illegible] बहुहस्तवेत्॥ रक्ता हता [illegible] ॐ क्रौं
ठः ठः ठः स्वाहा इत्यरमंत्र दध्याद्योगनितेष यो [illegible] इत्तिसद्यो जम्बा कृत्वा तद्धामा [illegible]
वेन संसिद्धः॥ तदनुदीपशिखा ततः अग्रे [illegible] नागम धाम॥ मत्वा सिद्धो जंगलदर्शनः
वाप्नलसमागच्छेत्॥ ध्यातोऽद्रवयति [illegible] कामेश्वरः [illegible] ॥१५॥ अन्य देवता मेश्वर पदं दत्वा
ध्यानाम क्लिन्नी यया युक्तम्॥ आ नयनद्रव सामि लिपरतः [illegible] काममोहनार्तान्॥१६॥ अपवुतं जप्त्वा
कृत्वा तद्दशांशेन त्रिमधुरहवनं दत्वा॥ साधित तच्च निष्पादयेत्ति विरवती नीजन॥१७॥ करसिल
सोत्तमघस्म्त निसर्वितिता चक्र डमिनी॥ ध्रुवमाकर्षति वश्यापतिद्रावयति श्वालदूपाय
कांतासु कामदेवो वा चिच वा चस्पातिमरेगर॥ ठः ठः ठःसप्रजिरस्पाः इत्येः सा दोत्त्र रात्र व
ति॥१९॥ विंशतिसहस्रजाप्दशांशहोमेन पारायायाश्च सिद्धिं व्रजतिसविंदुःस्वरोष्मःसर्वसिद्धिनं
रः॥१९॥ पीनसीनः शिसदन्तेः कुंचहूदन सदनेषु पुरुषं क्षिपं च वारणं वशयति रमणीमपि ध्यातः॥१०॥
ईमदमदमादय मादय क्रों ह्रीं कामरूपिणी स्वाहा॥ साध्योयमयुतजापादहोम कुसुमदशांशहोमेन॥११॥ अथ कामधाम विनिर्दिष्ट वामकारानामित्रेन परिपठितः॥ क्रीं इति द्रवयति कुवंतीनिः
पोडिता सिद्धये मिव॥१२॥ लक्षैकजापपूर्वं दशांश तिलहोमसिद्धः स्वेरवा॥ अपूर्वोति
द्रुगमिपिस्त्र्योदयसमयजाप्येन॥१४॥ नभसंस्रुद्यमथवदं बक कुसुमहोमार्थ सं सिद्ध॥ ॥१५॥

उष्मा त्रास्तंतत्त्वंससी मपि [illegible] यति॥१५॥ नाडीचतादबीजं सरोचनकुंम्प राया चपरिपिष्टं॥
वशायति मूर्द्धि विन्यस्त सिद्धादरमंत्रितं॥ क्रींति॥१६॥ ऐंन्चामुंडे कुलकुलस्वुल चुज मोह्य मोह्य
वशमानय अमुकं स्वाहा॥ अत्रिमंत्र सप्तहस्तो वशायति तांबूलदानेन॥१७॥ चामुंडे जय जंभ
य वशमानया मुकं स्वाहा॥ अत्तिमं अपुष्पदानेन प्रणवादियं त्रं वशीकरणः॥१८॥ श्रीन श्रीरसि
स्थितमाध्यंजनी वंशी वद्धमयूरयोः राक्षिसव्य करेण गृहीतंबाल्यादिके न मंत्रेण॥१९॥ चूर्णविधा
णमिपां वशायति नारी॥ ह्रीं रःपपे॥ दन्तं च धव लकं कुसुम हस्ता दो॥ नादिके न मंत्रेण॥२०॥ ह्रीं कुः श
स्यात्॥ ॐ डलिनी मंडि नोघ बिंदुयुतः॥ अस्य विंशतिवारान् द्रवयति नारी रतोजपतः॥२१॥
वामपुर मध्यगाति निवायाविति संप्रदायोयं॥ मद जातपत्रवदनेस्फुटिकाकारं च वरमनु
चिंत्य॥२२॥ ध्यानं चेत्र स्मिन बीजं द्रवयति हा मारतेरूप[illegible] वामांगे वामहर्षो वामकरेणैव वा
म वायौ॥२३॥ तद्वहृष्टामुपचारैः कुचोरू करकाम [illegible] वनेषु॥ पुष्पोधनलंदजरां मूलविच
र्यापि वर्णयोर्यस्याः॥२४॥ क्रियते [illegible] म स्यतच्चरणमेव च्युतिस्तस्य॥२५॥ हतना त्य
मारूतो च्छिन्दत्समधुकरपद्मयुगलमिति [illegible] न॥ ध्रुवमनुधावति [illegible] मारा ग्ररदनयुगम
चूर्णेन॥२५॥ अपंचत्रिशिखम स्थाने न तदिने पञ्च [illegible] मिति संप्रदायः॥ आदायकृतवर्तिकारनमं
त्रचितादग्धयोश्च दंपत्योः॥ या तेन[illegible] तेस्त्री तमेव [illegible] पुनमनुयाति॥२६॥ दक्षिणदिशस्थिफलके
पुनत्र नमस्पतक्रपतेयस्याना विलिख्य चिताङ्गा[illegible] वश्यमायाति॥२७॥ तारूस्य तां [illegible]
[illegible]

क.पु

तां हृदि तिष्ठतीं [illegible] मोहनतरं करता ॥ [illegible] पापुधु [illegible] सामायो [illegible] ॥२८॥
स्तति लव [illegible] यति नैः स्वागमत्यति [illegible] पालेचनच्चाण [illegible] वद्भुतौ विश्ववशन
यति ॥२९॥ चूर्णादि [illegible] चूर्णादि [illegible] मुनि [illegible] रसे [illegible] वाट [illegible]
गमनमिवितः ॥३०॥ चूर्णेनमाक्षि [illegible] चूर्णे [illegible] वशायत्ति व [illegible]
स्त्रायां [illegible] पिनिज [illegible] चित्तं दद्यात् ॥३१॥ [illegible]
सितरविजटा निष्कुंगाभ धुपंचा [illegible] लिते ॥३२॥ [illegible] पुष्पित
गरिलागपिष्टं । पानेय [illegible] परमंवशी [illegible] ॥३३॥ वज्री [illegible] चूर्णेन ना
विति [illegible] ॥ [illegible] चूर्णे [illegible] वा ॥३४॥ चूर्णे नि [illegible] वानर
विष्ठ [illegible] ॥३५॥ वरयुवतीमलयोद्भव
[illegible] सर्वजनानां वशी [illegible] ॥३६॥ [illegible] मधुक
रपत्रतगरमूल [illegible] जंघानां । [illegible] ॥३७॥ [illegible]
जत्मलपुनर्नवामपि [illegible] तेन नयनाञ्जनमाकुः परमं वशी [illegible] ॥३८॥ मातंगनि
तमरनयन नासि [illegible] लिंग [illegible] पुष्पार्क [illegible] नवचतुवने [illegible] ॥३९॥ मदनंक
[illegible] तिनाम्ना महावशी करणमुनयमेतिविदितु नयः । [illegible] विधिना विश्वं वशं नयति
॥४०॥ सघुमलयकुष्टकुंकुम [illegible] दिवलिकुस्प्रसलिलसंजनित [illegible] चिंतामणि [illegible] धूपः ॥४१॥ ११६

ना

[illegible] विक्रय [illegible] धूपमिमं [illegible] ॥४१॥
[illegible] जमासन [illegible] ॥४२॥
[illegible] विधाय [illegible] ॥४३॥
[illegible] विक्षिप्तम् ॥४४॥
नयनगतं युवतीनामपि [illegible] रोचनया पिष्टम् ॥ [illegible]
[illegible] नयति ॥४५॥ दत्त्वा द्विजाय पायसभोजनमस्या घृसित [illegible]
[illegible] परमम् ॥४६॥ [illegible]
[illegible] ॥४७॥ [illegible] सितगिरि [illegible]
[illegible] पुरुषो [illegible] नयति ॥४८॥ [illegible]
[illegible] ॥४९॥ [illegible]
[illegible] ॥५०॥ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] दंडो
[illegible] ॥१॥ [illegible]
[illegible] ॥२॥ [illegible] मधु [illegible] रागेषु [illegible]
[illegible] ॥३॥ [illegible] सिद्धनाम्ना [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

वृ. कर्षत्रयं रक्तसोघ्रमदा चानि ॥ पारकरूपं जलमुपरि[illegible] मधुसूतं सःर्लिवा लि[illegible]
नां त्रिफला सितसर्पिषा तिकुसुमका ॥८॥ पिप्पलं[illegible]सहि[illegible] ओरि[illegible] गोक्षुरा ॥
मधुसैंधव[illegible] कृष्ण[illegible] लिलंवा ॥ लिंग[illegible] ॥ इति श्री[illegible]
बलान्मथ शतावरी कामिरी सातपयसा ॥ [illegible] निशि पानि प[illegible]तिमलतान
ति ॥८॥ मधुवृसावृषभे वृसहितं तु[illegible] मधुना[illegible] पिवेद्[illegible] धुवतीरति प
टं घते ॥९॥ पंचाद्यलमात्रं[illegible] सितासहितं [illegible] ॥ पादं नववारिपादमितम
साध्यमर्दितं चि[illegible] ॥१०॥ गोधूमचूर्णपालेनो[illegible] चर्तुजानः ॥ कंदर्पसमरदर्पि
तदुमदयुवती जनं जयति ॥११॥ दशगुणदुग्धे पच्च शतावरी गा[illegible]तं घृतं मश्नत ॥ माग
धिकासहितं सर्वावर्करं नवति रतिमन्त्रः ॥१२॥ वस्ताण्डसिद्धदुग्ध[illegible]यो वा भावितां
तिलान्मश्नत ॥ दुग्धघृतसाध्यो वा वस्ताण्डे मल्लवणे सकाण्डे ॥१३॥ स्वरसेन भा
वितं वा विदारिकाचूर्णं मिता मघामधुमिलितं ॥ गोक्षुरविदारिकाभवचूर्णं समभागं
शर्करासहितं ॥१४॥ स्वरसेन भावितं धात्रीचूर्णं सितामधामधुमिलितं ॥ लीढ्वानुप
यदुग्धं वनरपाति स्त्रीशतेनापि ॥१५॥ यववृषभ माषचूर्णैः सतिलगोधूम मागधी
सहितैः ॥ रूपाविन्नौ घृतपक्वान्नुंक्त्वा[illegible] रसप्राकृत ॥१६॥ घृतमधुसहदेवा वित
स्तोजभिर्नक्वचिलिम्पनान्नेवा ॥ [illegible] ॥१७॥ इति वाजीकरणाधिकारः ॥

कपिकच्छु मूलेन चां मदविकारलसा गमूत्रं पिष्टेन ॥ मत्लेनः स्तब्धकरण
मूलेन दूरीक भायास्त ॥१॥ सितशरपुंखामूलं विधिना संगृह्य शावने दिव
से ॥ कन्याकर्त्रितसूत्रं बीजस्तंभस्य कारणं परमं ॥२॥ अपसव्येन त रं
गोदक्षिणकूट हयत्तमारूढं ॥ वारयति बीजपातं ः सूकरदंष्ट्रा मणिरचि
तं ॥२॥ कुक्कुरतायाः सिद्धिं तं बीजं स्तंभयति वा मजघायाः ॥ कृष्णबिडाल
दक्षिणपार्श्व द्रवमस्थि खंडवा ॥२॥ [illegible] ॥ ॥ मनि
कुसुमतदुलीयकमहिषीक्षीरेण पारद कमि[illegible] ॥ तरुणीनां तरुणो भ
वति दिवस[illegible]दत्तिनां हि[illegible] ॥२॥ अर्जुनतरुकोटराकारक मलपिष्पली चू
र्णमाक्षिकं मधुना ॥ परापत्त[illegible]हितस्तंभ[illegible]विरूपनी प्रधानधातु ॥२२॥
पलमात्रमाषचूर्णं घृतमधुखंडे[illegible] अनुपान[illegible]क्षीरं पा
वदुरेतो बद्दुलमुक्त्वे दृढ ॥२३॥ [illegible] वित घृतं सा[illegible] मा
षचूर्णं वटके[illegible] तुलेन रात्रमयात प्रा[illegible] मुष्क
[illegible] हठ मग[illegible] निपीडारसिका[illegible] निशि[illegible]ना: कुमा

तपचमत्स्युतिंजयति ॥२६॥ शितशारपुंखा [illegible] पमसाधि [illegible] माननेनैनि
हितं ॥ एकक्रूरंज बीजा [illegible] तरंग स्तंजय [illegible] ॥२७॥ [illegible] स्याद्रुपी [illegible]
तितस्युतिंजयति ॥ आमस्तकेमोकार [illegible] मनोमु [illegible] ॥२८॥ [illegible] शिशार
पुंखामूलपारदरससंशितपाणिनी [illegible] ॥ एक [illegible] बीजावर्ये बीजावधा
रयति ॥२९॥ मूलेदक्षिणकरस्य [illegible] भवति [illegible] पद्धसंजाते ॥ ग्रथि
तं दक्षिणकरे [illegible] त्वद्रूकानारिषु ॥३०॥ [illegible] तवपदेशादीक्षितपार्श्व
स्थितमस्थिकृ [illegible] बद्धा स [illegible] बीजं वा बीजं स्युतिंविजयिवदनं ॥ न ॥३१॥
मुद्राज्यदुग्धपिष्टं [illegible] मूलमकि लेपनतं ॥ [illegible] पादजमूत्रा [illegible] पिष्टं
वा वानरीमूत्री ॥३२॥ कौसुंभतैलमथवा वर्षाभी चूर्णपक्कमथ्यं गात्रं ॥ च
रणस्युतिंजयिनी योगा [illegible] तेन संदेहः ॥३३॥ माहिष घृत [illegible] दवी मधुषि
तकमले केसरे [illegible] ॥ [illegible] चटके [illegible] पित ना [illegible] बुद्धि यारमने ॥३४॥
॥ ॥ इतिबीजस्तंभनस्तंभद्धिकारः ॥ ॥ तिलतैलघाटदके णमनःशि
लाजातिपर्णरसकुष्टैः ॥ वद्दयति लिंगमुच्चैः सपदि नो [illegible] ॥३५॥२२॥

जंतर्दग्धमंदग्धसैंधव ॥ जलस्तुककमलदलवल्ली ॥ [illegible] तकथा लेपो [illegible]
रसभावितेस्तद्द [illegible] ॥३६॥ वल्ली दाडिमवल्कल वृहती फलकुष्टसहितसि
द्धातैः ॥ सिद्धसर्षपतैलं मृणालकुंभीरसेन तद्वत् ॥३७॥ लिंगं वृ जनि विवृद्धि म
हिषीमलमिलितपूर्वं मालिप्तं ॥ माहिषनवनीता [illegible] तज लकंदुकुष्टगामूत्र ॥३८॥
त्री घ्रातवचा कास्यसंहित माहिष म [illegible] नसर्पि पाच ॥ कुष्टिकास्मि हयगंधाम
धवमिलितलेपालिंगस्थवृद्धिकरः ॥३९॥ मधुतगरगोरसर्षप वृहती खरमंत
न ॥ कणाः समिलताः ॥ पवकुष्टमरीचसैंधवहयगंधामाषसंयुक्ता ॥४०॥ स्त
नयुगलकर्णपाली [illegible] जस्तु जशिखरापचयमेता ॥ धुवमुद्धर्त्तनविधिनास
[illegible] तान्यासेन कुर्वे [illegible] सि [illegible] घ्रातकष्टहतीलन [illegible] फलकल्क साधितै ॥ कु
रक्तलिंगमर्दनविधिनाकट [illegible] सिलिंग [illegible] ॥ [illegible] नी [illegible]
घ्रातकवालक [illegible] नीत [illegible] परि [illegible] कतीफवार समिर [illegible] वति
माहिषीमलमालितमात्रं लिंग ॥ [illegible] ॥४१॥
कुलयीवतीजनदर्पा निद्दर्पं [illegible] नी ॥ [illegible] पा [illegible] नावि
दत्वासिंधुजन्मजलवाखे ॥ माहिषनवनी [illegible] चर्वीते ॥ [illegible]

गंधापामा [illegible] हिपमदुम्मिलित पूर्वमालिप्तं ॥ [illegible] ति कपु कृतं [illegible]
वं पूर्ला ॥ [illegible] कूमंकदूस मरुणावर्ति तै [illegible] धा [illegible] मदित [illegible]
हिषमिश्रनवनीतं गतं बीजिनं कन [illegible] दलप [illegible] ॥ गोमय [illegible]
वं पश्चादनेन सलिलेन [illegible] ॥ हय [illegible] नादयेत् [illegible]
॥ ॥ इति [illegible] ॥ दद्रु कुंकु [illegible] सि [illegible]
डीसतगर पादै ॥ वादूल्न कूरिके [illegible] सीद्रो दल [illegible] तमरेवा [illegible]
रो हितपित्त दूरगा [illegible] विमलो जनास [illegible] वा ॥ [illegible] लेपसो [illegible] जनय
तिस्रूपान संदेह ॥ [illegible] दाडिमपं चांगेवा सिद्ध सि [illegible] थे [illegible] तल्लुते ॥ [illegible]
तिकाकुसुमै वा गुहा [illegible] गेनसा भाग्य ५५ ॥ समपा सांगे [illegible] दपनक कर्पू
रोशीर पुष्करांबुधरे ॥ सिद्धं सर्षपतैलं समस्त [illegible] दोष मपनयति ॥ पर
लिंग कृषाय क्षालन नम [illegible] जन निंब सारस्य पोवा ॥ जीव कजंबू कां बु
क्षालन नम [illegible] त्रिसप्तक पावक ॥ ५३ ॥ स [illegible] कूरलं हरिताल ताल बीजं
धिं धुज घननाद क [illegible] क्षार ॥ रस्योकु बीज कुनटी वचास्नुही [illegible]
[illegible] ॥ ५४ ॥ वरणागिरि [illegible] केवल [illegible] सा [illegible] सप्तधा सिक्ता ॥ सिक्ते [illegible] ॥२३॥

कुरसेर प्यतो पिष्टा [illegible] यत [illegible] ॥ ५५ ॥ तत्काला [illegible] दलिका
व [illegible] वारि [illegible] पं [illegible] पूर्व कूरु [illegible] पं तेन क [illegible] न ॥ ५६ ॥ प
द्रिमुस्तक मुपनेतुं तद कौतुक मस्ति तालकं तुल्यो ॥ द्वि [illegible] षवि [illegible]
सह रिताल [illegible] ॥ ५७ ॥ शा [illegible] तिश्चर्ण [illegible] निपल्लाश [illegible] हरिता [illegible]
कुसुमं तैलमुत्पाटन पूर्वं विलेपना तद्वत ॥ ५८ ॥ सम भागो हरिताल के मे क
भाग [illegible] क्षारात् ॥ [illegible] शंख चूर्णा [illegible] तिरपाल [illegible] ॥ ५९ ॥
॥ इति रोमशातन विधिः ॥ ॥ अम [illegible] जन [illegible] तारी [illegible]
वाहरति ॥ [illegible] निहितं घृतमधु युक्तं [illegible] च ॥ ६० ॥ तंदू [illegible]
जलेन मूत्वं कमल [illegible] वा ॥ [illegible] कुतं [illegible] वलं [illegible]
[illegible] ॥ ६१ ॥ केवलके [illegible] कु [illegible] प [illegible] ॥ [illegible]
तंकृ [illegible] ता [illegible] पीत [illegible] दिन [illegible]
युक्तं ॥ अप [illegible] गु [illegible] कुसुमं [illegible] चतरु [illegible] ॥ ६२ ॥ [illegible]
त [illegible] पी [illegible] नाग [illegible] रस्य [illegible] ॥ दुग्ध [illegible] म [illegible] रम [illegible]
भवति ॥ [illegible] मूलम [illegible] द [illegible] प्रा [illegible] ना [illegible] कापा [illegible] दु [illegible]

नपीता द्राक्षा पूर्वं [illegible] या नांम्री॥१५॥ अ[illegible] मधु[illegible] कल्क [illegible] च
तन्ताय स्या॥ निर्मथ्य स्यात्स्मा हत्यमपत्र [illegible] सि परिप [illegible]॥१६॥ [illegible] पयसि
[illegible] घी पुत्र भागिनी भवति॥ [illegible] हयगंधा [illegible] त [illegible]
द्दुग्धं॥१७॥ रक्तवर्णी [illegible] पयसी [illegible]ध्या [illegible]॥ पीत्वा [illegible]
या पुत्रजीवस्य वा मूलं॥१८॥ [illegible] तुंबिन्य पय [illegible] नाशी चलत्समूल
मूलं॥ स [illegible] मधु [illegible] तेन [illegible]॥१९॥ रति गर्भधारण
विधिः॥ ॥पीतं मधुरं सं [illegible] गर्भ धाव
[illegible]॥ सा ज्यरक्त [illegible] ति हरति॥२०॥ [illegible] मधुक [illegible] लोध्र
चंदनोपेतं॥ तंदुलपयसा योनि पीतं गर्भस्रावं निवारयति॥२१॥ रुच ककुश का
शास्सर्पिः शीता [illegible] सरुचिता मधु दुग्धं॥ पुस्तान्वितं च पेयं गर्भस्रावे च [illegible] च॥
॥२२॥ खर्वशी पुष्पजटा पुष्या क्रीन्याप्तितां करोति वध्या॥ पीत्वा विल्व [illegible] गर्भो
द्दलै [illegible] च्यते गर्भिणी कुरुते॥२३॥ वृत्वा च सप्तरवंडं गुंजा मूलं निब
ध्य कटि देशे॥ सूचे त समाप्ति [illegible] सुखसूतिः॥ गर्भ पि॥२४॥ सित
पिंक लोचन करलं वर्वलं [illegible] मूत्रगतः॥ अति गर्भ पीडितानां॥२४॥

नीमूलं॥ घृत मधुलीढं चो [illegible] नि [illegible] संनिराय॥२५॥ सहकारि दाडिम [illegible]
[illegible] पनश्च॥ बिबाकरंज [illegible] हरति दुर्गंधां॥२६॥ ककुद कुसुम [illegible]
[illegible] नचसमन्वा गोः॥ [illegible] दिन [illegible] दिन निसहदकुं [illegible]॥२७॥
[illegible] सिरसिरी [illegible] चूर्णं मलितद्[illegible] [illegible] वानज्ञाय
ते॥२८॥ नलजव [illegible] रजलरोध्यतगारवालके [illegible] समन्वागोः॥ [illegible] पिव [illegible] नम
तर्नु तन्नु गंधमपनयति॥२९॥ [illegible] शिया [illegible] मन्वा गोले [illegible] मूल
मपनयति॥ परिणतनिं [illegible] कान्ति [illegible] करे [illegible] वर्जया॥३०॥
[illegible] नवा [illegible] मय [illegible] ना [illegible] सदन म
ध्यानि [illegible]॥ [illegible] सिवकुकदं [illegible] सुखं [illegible]॥३१॥
करटी [illegible] पर्दे [illegible] संगोमा॥
संको चयति [illegible] स्मरागा॥३२॥ [illegible] नि [illegible]
सितेन व [illegible] तावस्थाः॥ सत्वेण [illegible] स्पा [illegible]
नगा॥२३॥ पलंसियाति पुनः सा [illegible] नवानलु [illegible] विकन॥२५॥

वनिता स्वरस्वरस्तिमातं नुते ॥७१॥ ॥ ७५ ॥ अज[illegible] यासिता [illegible] येकित्सया पु
तं पिष्टा ॥ पानि[illegible]त नयुक्तिय मप्यदं [illegible] ग र्गया ॥७६॥ [illegible]
रा स्वरे स्वतन लाभ्रूक्व मं पर्तिा गुरु [illegible] स्तं ॥ वि ॥ पादलिसि[illegible] [illegible]
स्तं ॥७७॥ ॥ इतिसिरप्त समाधि [illegible] सी ॥ ॥पि प्याचिस्रितयो नाम [illegible] स्वरमज
रीपनने वया ॥ नव स्रुतायाः स[illegible] यानि मतं [illegible] पनयति ॥७८॥ गोमय
गारसमूचे पवणपूर्वं घृतेन सह लेपात ॥ हंति रुमी[illegible] मोकसिपनं वरूण
स्यसस्ताया ॥७९॥ कुष्टकमस्त बाला त्पल साधितं तैलेन पूरणं योनेः ॥ अ
नया गुड धूपन पापनिव [illegible] पेन धा ताया ॥ ॥८०॥ क्षिप्ता जाती कुसुमं यष्टी
मधुपंचपद्दवा नयवा ॥ तैलेनयोनि पूरणमात पनस्तेन बाधघ्नी ॥८१॥ ॥
इति सा निस्रूपो [illegible] नयन विधिः ॥ ॥ स्नूरगोपीकी [illegible] मिलितेन मूत्रलेन
कारबिन्दस्य ॥ स्मरमंदिरमंत्यंगा ॥ स्रंको चयितिप्रस्रुताया ॥ ॥८२॥ दुग्धेनपि
पीताक्ल न्यंत च्चाति कमलतंदुलकाः ॥ पुष्करं रुरुपुष्करभिक्स पाकान्या सयाग
ना ॥८३॥ जयति जयास्तनकाय विशाल मपि स्वपदो विशालतायाः ॥ आलकंदति
स्कंदापि कुमारिका या समं निशाया ॥८४॥ स्रुताया कश मुदर पीतं तक्रे मात्र

पनबीजेपकृतेसंकोचमेवंहिनं ॥८४॥ अधरोर्ध्वप्रस्थितयोयपात्रमगो षा णपो सूरी ॥ सं
कोचयत्रेतिकतिवृत्ति आनात्रिलेन ॥८५॥ अनयोस्त्रेयपात्रिनं मा ष्ठे मदनयदिरे यूरी
स्रवतः पतनो च्यानि रतौ रतां ते पिालम्प ॥८६॥ रजो निवृयरा जीवो त्रके सुरदेव दाकं निरो
पः ॥ प्रम्य पवेस्मात्रि विहितः वैरोतिसंकेचसो प्राप ॥८७॥ वतम धुसी धवले पादपि
स्तरिणी नां च तरुणी नां ॥ बालानाम बलानां विशालव्रतां बजति रति निलय ॥८८॥ इति नगरस्त्री
च विकार पाधिकारः ॥ आरक्वादि नासरुदपिकुरवगं धंसवस्र समपिरहति ॥ लवंग जफल जापवनम
वा च्यापद्विनाशयानि ॥८९॥ कुष्टं च वालके लायष्टी मधु मुस्त धान्य स्तक वल्कः हरति मुखस्
ति गंधं लिपानिरसानादिगंधं च ॥९०॥ जातिफलजाब्जी त्रिपत्री फणी बोल्की ककुष्ठसंदचिता ॥
श्रपरदतिपूगं वम स्वविवरपरिस्थितागुटिका ॥ १ विध्ययति पूगं गंधं चापुरवरागं हरति स्वा
घ सानमनु दिवसं ॥ कटु निलकषायरसं [illegible] मधुतदं तस्थानं नष्ट [illegible] ॥२॥ नानादंजे यापि षिलि
स कृत्वम धुमा [illegible] वितिगंदले [illegible] साक्रतं दिन [illegible] स्वारहा ॥३॥ तिलसर्षपिर
सं जना ध्यक कुष्टं स्तोध नर्ननि [illegible] राई चोर [illegible] सं [illegible] वि[illegible] नि [illegible] ॥४॥
निंबा स्व [illegible] उत [illegible] सो [illegible] पुतमु [illegible] दं [illegible] नो कुरु
गः ॥५॥ कुष्टं तिलसर्षप ओषधि सिद्धाथें [illegible] णे [illegible] ॥ [illegible] पान दन्तम्प [illegible] लोस्तं
सा न [illegible]

नाशयति ॥ [illegible] भवति [illegible] [illegible] वनीतनकाय [illegible] ॥ [illegible]
ावच्छ [illegible] ॥ तो [illegible] के यौवनपरिणा [illegible] ॥ ता
चनान्वितेन चलपामरी [illegible] वचूर्णयष्टी [illegible] लो
ध्रलेपन [illegible] भवति [illegible] निवदनानि ॥ १० ॥ परिणत [illegible] चनय
ष्टीमधुवृषिपं गुपभानाम् ॥ [illegible] वंदनलाक [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
गोर्जलेपिष्टे विलासिनीनां [illegible] तिनियान्तमयम् ॥ [illegible] घितिमु
खपंकजंलेपः ॥ १२ ॥ श्रीतांजनतंडुलजलनष्टा [illegible] भवति युवती नाम ॥ [illegible]
धनतस्कर भाति विपुलो तुंगकुचयुगलं युवती [illegible] चाकडुवा न्वितं [illegible] तां जलि [illegible]
न्ताराजि: [illegible] तनूल्यं तिलसंसाधितं विधिना ॥ १३ ॥ अकृतेपरिणवयसावनिता
नामपि त्रिसप्तरात्रेण ॥ [illegible] विपुलतं तुंगतृषितं स्तनयुगलं [illegible] यागेन ॥ १४ ॥ [illegible] तं
[illegible] गजदंत गजेंद्र [illegible] ॥ [illegible] पिष्टे लेपा [illegible] विनिवारयत्या
श्रु ॥ १५ ॥ [illegible] दितालं सनवनीतमपि [illegible] ॥ अथ तन्मस [illegible]
रति [illegible] चवेन ॥ १६ ॥ [illegible] यस्या न गेनरः [illegible] पति [illegible]
[illegible] तदिनपुरुषो रतेनस्या: ॥ १७ ॥ [illegible] विष्टासि [illegible] ॥ २५ ॥

जैनयां भजते ॥ साकृदपितां तदितः वांछा दूरेणपरिहरति ॥ १८ ॥ तां
विष्णुदपाकंदध्वास [illegible] केन भगलेपे ॥ भगजतिकृतेपद्रवति सा र
मणी रमणीय ताम्रमि ॥ १९ ॥ खररे तो मिलितारुण मुरख कपि शैफा
[illegible] रतिनि [illegible] ॥ गत्वा [illegible] कामीकामयते कामिनी मन्यां ॥ २०
[illegible] भवति नरो [illegible] धारतलेपनादश्चोपषद्धाया: ॥ यस्या [illegible]
पत्रे [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] भावितं वाष [illegible] विंदुयो तो रजनि [illegible]
पीयुतेमपितं ॥ [illegible] पत्रि विनियतम [illegible] रान्तर [illegible] पिषं [illegible] ॥ २२ ॥
सति [illegible] चूर्णं [illegible] साधितं मधुना [illegible] तं [illegible]
रामयात [illegible] तमचिरेण [illegible] स्थिना [illegible] विधं कर [illegible]
[illegible] भागे [illegible] काले [illegible]

कास्य कूर्मपिष्टयंत्रे नाम्ना॥ कपिलेश्व[illegible] विदग्धो नरसा तदो [illegible]र्पणीयः
२५॥ काको [illegible]कुजलोम्नां यो मे [illegible]युनयोस्त कृतं॥ अनयोः स[illegible]ना ते मा
नानामलिपि विवर्णि बदनौ॥ कु[illegible]मरस्वा कमाडुरे ग्धिं [illegible] विषसाणां च
रोम प्रियप्रमः॥ क्रियते पत्र च वेश्मनि तत्र त्यानां प्रिचेष्टा वृ सा॥ २६॥ असुरत
रु तगरं वचैं कुष्ठ मगमयमलपाद्भा धरस धूपं॥ वेश्मनि निक्षिप्त स्तोषां
परस्परं प्रीमीतुनुते॥ २७॥ नागार्जुनेन कथिता योगा वरु वर्णा उड्ड
यैः॥ दृष्टफला मिह काक्षि योगां तत्रो ग्रीष्म[illegible]॥ २८॥ भृंगराजो मोहन २७
ते मोहयत स्तिलक तो विधं॥ अजे [illegible] सरुदं स्वासरल [illegible] सहदेवा
३०॥ प्रिं रविस्वि रवय्या जारिकया स्थिते सुरवास्थती कृतंजम्यो॥ नगनि
ए ते भावयते दासी भावं च भामिन्या॥ गोवंद नागार्जुनकर्ता स्वरंपि

[illegible] न कुल्य॥ [illegible]न कन्नेरा चि[illegible] लिता चिच फुलेआ पुलेमु चे सिवादू जलिंगले पकीजे॥
वीर्य स्त न होय॥ आफु [illegible] अथवा नाग पत्री सिसि विजे व रिदू धघे इजे स्तं न होय॥
पोस्तया क ऽऽऽ बोवा ऽऽ चित्रक ऽऽ सारवर ऽऽ एक त्र वाटून यक एक प्रमाणे से विजे स्तं॥
होय॥ [illegible] लिंधात त्यामाणसाचे डाव कडील लागी फुटून निघाला असे तत [illegible]॥
आरखून त्याचे मणि करून कमरेबा धिजेपट [illegible] भागी मणि असता स्तं न होय फु[illegible]॥
लियाडाव होय॥ रुइचा कापुसा चि वाति परडेल तेल [illegible] नदी प[illegible] विजे होय॥ ४
रिवाति जलेल तोवरि स्तंब होय॥ कापुर पारा सागि गुंजा पिपलि नाव डासगव्याचे॥
[illegible] त्या चेर सामध्ये मधु मिश्रित करून लिंग लेप कीजे स्तंब होय॥ काच कुहिरीचे॥
[illegible] मात त्याबो कडि पाचे मुत्रे सि न गाउन लिंग लेकीजे [illegible] रसताल [illegible] पात [illegible]॥ २४
न होय॥ पाढरी सुपटीचे मूल व कोटे मा [illegible] च [illegible] करून कटि बाधि॥
जे स्त न होय॥ [illegible] पाचे चूर्ण वाति [illegible] निघा [illegible] न एक वण [illegible] चे तुप वाति॥
[illegible] जलवर [illegible] वाति [illegible] सिरस्तं॥ [illegible] अगुलि चे [illegible] लि चे दुग्ध॥
सि व नि वा [illegible] चि कसि वाटून [illegible] लेप कीजे नरन [illegible] कूल॥
[illegible] मस [illegible] नेता [illegible] सरि [illegible] व धरिजे स्तं [illegible] चा॥
[illegible] ऽऽऽ पिपलि ऽऽऽ सारवर ऽऽऽ [illegible] सरस फरी [illegible] दुधे च
इ जे स्तं ०॥

कान्तं मन्ना ॥ निरि रुविरि तः [illegible] नरएगां तत्प्रेम[illegible]वयनि ॥३२॥ [illegible]गरजो [illegible] नुकूरज
रुखवलाकृ सपजबभुना ॥ [illegible] अयि भाव शी[illegible]रुने ॥३३॥ [illegible]का सुकस
रुदेव वन्पागो चनो ह्रौवं [illegible] नायोप[illegible] रएान ॥३४॥ [illegible]
जः [illegible] त्वां विष्णुकान्ता सना [illegible] ता ॥ मुव [illegible] तम [illegible] व [illegible] वो जत्त त्तेरसोक
रुते ॥३५॥ विष्णुकान्ता क्षितर [illegible] जलमप्राप्ति प्रियावानियपल ॥ वनिताव रंगा विवरे
ज्ञावाएगमा कुर्व प्री [illegible] रएगम् ॥३६॥ विष्णुकान्ता रु [illegible] गरजो निसर्गं च सरुदेव्या ॥ पद
न सदनक्षेपतत: स्रोजागम्य – [illegible] ॥ मो [illegible] दर्श [illegible] विष्णुकान्तां जली चूर्णम् ।
रजा [illegible] त्वाता गर्जवती नवं तिवं व्याप्रि ॥३८॥ ॥ त्रि खित्रि जणाया सरुदं त्वा पुत्र जारिकुमारि
का – ने ॥ गुह्ये निधाय यत्ने सुखस्रुति मरु गत्ता पि ॥३९॥ सरुदत्वा त्याहर जरयास
रुसरुदेव्याद्दं च ॥ त्रि खित्रिखया ॥ स्तत्ते पस्य प्रारीरे सम कायाणि सिध्यंति ॥४०॥ उद्
तः पादिन आमर रुयत्नेयस्ता ॥ जीतिबो [illegible] निधाने जो कनाम्न: सदसिवकुमत: पंडिता २८
घा नां कवीनां ॥ एतत् श्री राज्य विद्या धररु चिन नयः काम [illegible] रुस्यं ॐ क्लो क: कामु कानां
किमपि रनिकरंव्याजरो [illegible] त्रकेन ॥४१॥ इति सध्य रुपठीयमस्तापंडित महाकवि निरुव घवि
घाधर रुचितनयं श्री ॐ क्लो कन्तंरति रहस्यं नाम कामशास्त्रं समाप्तिमगमत् ॥ ॥ ॥